ISSN : 2321-9920 June, 2018, Vol. (2) No. 01 & 02

Apollo Journal of Educational Research

सम्पादकीय

वर्तमान समय में यह आव यक है कि आधुनिकता एवं आधुनिक संसाधनों के मध्य सूचना संप्रेषण तकनीकी के तेज बहाव को शिक्षा के क्षेत्र में संतुलित रखा जाए। आधुनिक भारत के समक्ष यह चुनौती है, कि वह शिक्षा एवं शोध कार्यो में इन संसाधनों का प्रयोग कर शैक्षिक उत्कृष्टता को प्राप्त करे, किन्तु यहाँ चुनौती यह भी है कि यह प्रयोग सही दिशा में सही तरीकों से सही रूप में हो। कँटीले जंगली पौधों के साथ खूबसूरत खुशबूदार फूलों और फलों के पौधे एक साथ बेतरतीबी से लगा दिये जाने कभी सुन्दर व सुगन्धित बगीचे नहीं बनाये जाते। कँटीली जंगली बेलें, नाजुक खूबसूरत फूल–पत्तों की बेलों पर फैलकर उन्हें मुरझा दिया करती हैं। सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के शिक्षा के क्षे शोध कार्यो में प्रयोग से इन प्राकृतिक संदर्भो के भाव समाहित करने होंगे तभी शिक्षा के क्षेत्र में इनक सफल प्रयोग हो सकेगा। हमे नीतिब) व सुव्यवस्थित रूप से इन तकनीकों का प्रयोग शिक्षा के एवं शोध कार्यों हेतु करना होगा

Official Publication of :
Apollo College
Anjora, DURG (C.G.)
e-mail : info@apollocollegedurg.com
Phone : (0788) 2623444

अपोलो महाविद्यालय – एक परिचय

अपोलो महाविद्यालय जो कि पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है, जो दुर्ग से मात्र 6 किलोमीटर दूर अंजोरा ग्राम में स्थित है। महाविद्यालय का निर्माण लगभग साढ़े 9 एकड़ भूमि में किया गया है। य. महाविद्यालय सृष्टि एजुकेशन एवं वेलफेयर सोसायटी द्वारा सन् 2002 से संचालित है। इस समिति द्वारा बी. एड. सन् 2005, एम. एड. सन् 2009, फिजियोथैरेपी– बी. पी. टी. सन् 2002 एवं एम.पी.टी सन् 20. नर्सिंग–बी.एस–सी. सन् 2008, एम.एस–सी. सन् 2013, पोस्ट बेसिक सन् 2011, जी. एन. एम. स- 2011, ए.एन.एम. सन् 2011, बी.फार्मेसी सन् 2009 से कोर्स संचालित है। महाविद्यालयीन परिसर में ही विद्यार्थियों हेतु छात्रावास, जिम, स्पोर्ट्स, स्टेशनरी शॉप, बैंक एवं ए.टी.एम. की सुविधा प्रदान की जाती . महाविद्यालय में कुशल एवं उच्च शिक्षित शिक्षक हैं, जो कि शिक्षण में नई–नई शैक्षिक तकनीकों का प्रयोग कर शिक्षण को प्रभावी बनाने के साथ–साथ विद्यार्थियों के उज्ज्वल एवं बेहतर भविष्य के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। महाविद्यालय में गुणवत्ता युक्त शिक्षा देने के साथ–साथ विद्यार्थियों के बौद्धिक, मानसिक, नैतिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास पर भी जोर दिया जाता है। इसके साथ ही महाविद्यालय का वातावरण अत्यंत ही शांत, हरा–भरा एवं सुरम्य है, जो कि विद्या अध्ययन करने के लिए अनुकूल है।

सत्र 2014–15 में अपोलो महाविद्यालय का राष्ट्रीय प्रत्यायन मूल्यांकन परिषद् (NAAC) द्वारा मूल्यांकन किया गया तथा "B" ग्रेड प्रदान किया गया, जो महाविद्यालय के उत्कृष्टता की ओर बढ़ते कदम का परिचायक है। नैक समिति द्वारा महाविद्यालय को आवश्यक दिशा–निर्देश भी दिये गये, जो महाविद्यालय को सर्वोत्तम बनाने में मददगार होंगे।

महाविद्यालय को गौरवान्वित करने वाले अनेक कार्यक्रम हुए जैसे—अभिप्रेरणा पर व्याख्यान, महाविद्यालय में क्राफ्ट को बढ़ावा देने के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं ने विभिन्न प्रकार की कलाओं में पारंगत होकर अभ्यास शिक्षण के दौरान शालेय विद्यार्थियों को भी इस कला में पारंगत किया।

ग्राम–महमरा में सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन, पीलिया परीक्षण जैसे—विभिन्न स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन। इन कार्यक्रमों द्वारा महाविद्यालयीन विद्यार्थियों ने सामाजिक सहभागिता दर्ज की, वहीं समरसता का पाठ पढ़ाया। महाविद्यालय का एक उल्लेखनीय कदम 'सद्भावना दिवस' का आयोजन है जिसका उद्देश्य विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य सामंजस्य व सहयोग की भावना को बढ़ावा देना है। इसमें विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें दुर्ग, भिलाई एवं राजनांदगाँव जिले के महाविद्यालयों ने हिस्सा लिया। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी बी.एड. एवं एम.एड. के विद्यार्थियों का स्वास्थ्य परीक्षण महाविद्यालय की ओर से किया गया।

एम.एड. के विद्यार्थियों के लिए समय–समय पर शोध संबंधी व्याख्यान का आयोजन कर उन्हें इस क्षेत्र में विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया गया तथा उन्हें इस क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन दिया गया।

एलुमिनी संघ द्वारा शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों को क्राफ्ट प्रशिक्षण दिया गया, जिसके दौरान विद्यार्थियों ने विभिन्न कलाओं को सीखा एवं सराहा। वर्ष भर बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के साथ–साथ विभिन्न क्रियाकलापों एवं गतिविधियों के द्वारा प्रशिक्षित किया गया, जो उन्हें उच्च कोटि के शिक्षक बनाने में सहायक होंगे। महाविद्यालय शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को आवश्यकतानुसार विभिन्न लैब (मनोविज्ञान, शैक्षिक तकनीकी, क्राफ्ट, विज्ञान एवं कम्प्यूटर) की सुविधा एवं सभी शैक्षिक सुविधाओं के साथ प्रशिक्षण देता है, जिसमें बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके, जो उन्हें उच्च कोटि के शिक्षक बनाने में सहायक सिद्ध होंगे।

Vol. (2) No. 1 & 2 **ISSN-2321-9920** **June, 2018**

APOLLO JOURNAL OF EDUCATIONAL RESEARCH (AJER)

CONTENTS

- अपोलो महाविद्यालय – एक परिच 2
- Editorial Board 4
- Social Intelligence of Teachers
  Dr. Paras Jain 5
- Values in Everyday Life
  Prof. Sushil Kumar Goel 10
- Life Skills and Youth Empowerment
  Gisha George and Dr. Lissy Koshi 15
- Nature Study Camp and Social Health : An Experience
  Chaitali G. Sinha 19
- Effectiveness of Multimedia Package in Learning Vocabulary in English
  Mrs. Kuldeep Kaur Juneja 23
- Emerging Issues in Teaching : Does Multimedia a Threat to Teaching in Future ?
  Dr. Veena Jha and Aneesh Jose 30
- विद्यालयी परिवेश का शिक्षकों के दायित्व बोध पर प्रभाव : एक अ
  डॉ. रंजना श्रीवास्त 34
- महिला शिक्ष.
  दिनेश प्रताप सिं. 38
- आधुनिक शिक्षा में नवाचार तकन
  श्रीमती अर्पणा राजपू. 49
- उच्च शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमि
  अरुण कुमा. 53
- वर्तमान परिदृश्य में अध्यापक शिक्षा के मुद्दे एवं चुनौति
  डॉ. मनीषा तिवारी (पाण्डे) एवं डॉ. विजय प्रकाश 59
- अध्यापक शिक्षण संस्थाओं की वर्तमान स्थि
  श्रीमती नम्रता बुलदेव 62
- कौशल विकास एवं रोजगारोपरक शि
  तुकेश कुमार वर्म. 62
- सूचना तकनीक के सहारे फैलता आतंकव.
  श्री मनोज विश्वकर्मा एवं डॉ. सतीश कुमार व... 62
- विभिन्न विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक अभिवृत्ति पर अध
  श्रीमती शालिनी वर्म 62

EDITORIAL BOARD

Chief Editor

- **Dr. Basir Hasan**
  Prof. & H.O.D., Deptt. of Psychology & Education
  Pt. R. S. Shukla University
  RAIPUR (C.G.)

Editors

- **Dr. P. K. Srivastava**
  Former Professor of Education
  Retd. Principal of Hr. Ed. of Army Institute
  PATHANKOT (J & K)
- **Dr. Angha Agashe**
  Principal, Apollo College, **Durg**

Associate Editors

- **Dr. Ritu Aggarwal**
  Director, Anvita Psycho-educational Testing Centre, Sakarpur
  DELHI-110 092
  Mob. 09711192050
- **Dr. Yeasmin Sultana**
  Deptt. of Education, Tezpur Central University
  TEZPUR (Assam)
  Mob. 09401868128

Executive Editor

- **Rakhi Sharma**
  Assistant Professor,
  Education Deptt. Apollo College, **Durg**
  Mob. : 09827730301

Consulting Editors

1. **Dr. Mahesh Bhargava**
   Renowned Psychologist
   Harprasad Institute of Behavioural Studies
   Sikandara
   AGRA-282 007 (U.P.)
   Mob. 09837061093
2. **Dr. (Mrs.) Haseen Taj**
   Professor Deptt. of Education
   Bangalore University
   BANGALORE-560 056 (Karnatak)
   Mob. 09844208745
3. **Prof. (Dr.) A. Jahitha Begum**
   Prof. & Head, Deptt. of Education
   Gandhigram Rural Institute (Deemed University)
   DINDIGUL (T.N.)
   Mob. 09443273174
4. **Dr. Shradha Rai**
   H.O.D. Deptt. of Psychology
   S.V. Arts College, Gujarat University
   AHMEDABAD (Gujarat)
   Mob. 09825744261
5. **Dr. Renuka Kumari Sinha**
   Professor & Head, Deptt. of Psychology
   Jai Prakash University
   CHAPRA-841 301 (Bihar)
   Mob. 09934654347
6. **Dr. S. B. Sharma**
   Dean, Faculty of Science
   Motherhood University
   ROORKEE (U.K.)
   Mob. : 08171407448
7. **Dr. Jasraj Kaur**
   Associate Professor, Deptt. of Education & Community Services, Punjabi University
   PATIALA-147 002 (Pb.)
   Mob. 09855465521
8. **Dr. Poonam Chand**
   Associate Professor
   Deptt. of Psychology
   Agra College,
   AGRA- 282002 (U.P.)
   Mob. : 09568359536
9. **Dr. Seema Dhawan**
   Associate Professor, Deptt. of Education
   H. N. B. Garhwal Central University
   SRINAGAR, GARHWAL (U.K.)
   Mob. 09411110597
10. **Dr. Lissy Koshi**
    Assistant Professor
    Mount Carmel College
    KOTTAYAM, KERALA
    Mob. 09446963449

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2018, Vol. (2) No. 1 & 2 : 5-9
© Apollo Journal of Educational Research

SOCIAL INTELLIGENCE OF TEACHERS

Dr. Paras Jain

ABSTRACT

Social intelligence is the ability to get along with others and to get them to cooperate with one. It also involves a certain amount of self insight and a consciousness of one's own perceptions and reaction patterns. The classroom is an important place for understanding and development of socially intelligence. It is essential for teachers to take interest with the students effectively and for better understanding the students in the school.

INTRODUCTION

Everyone needs intelligence in general and social intelligence in particular. Social intelligence is essential for the teachers to interact with the students effectively and for better understanding the students in the school environment. Social skill is classified as toxic effect and nourishing effect. Toxic behaviour makes people feel devalues, angry, frustrated and guilty. Nourishing behaviour makes people feel values, respected, affirmed, encouraged and competent. A continued pattern of toxic behaviour indicates inability to connect with people and influence them effectively. A continued pattern of nourishing behaviour tends to make a person much more effective in dealing with others. Nourishing behaviour indicates high social intelligence while toxic behaviour indicates lower level social intelligence.

As the child grows, the social behaviour of child undergoes a change. Social intelligence of an individual is to react to social situation of daily life. It is the capacity to balance effectively with people. It is the ability of tolerance, ability of sharing joys and sorrow with others, give and take and mixing with others. Thus social intelligence is the ability to deal and adapt with people. Social intelligent persons are able to handle the people well and make friends easily. They understand human and social relations. There are many external and internal factors which affects the level of social intelligence. The level of social intelligence differs among individuals.

School is a miniature society which consists of students of different ages, religions, race, castes, creeds, languages, cultures, intelligence levels, attitudes, aptitudes, abilities, capacities, perception, adjustment, personalities and so on. Teacher has to handle all types of students which is possible my highly socially intelligent teacher effectively.

Objective of Study

- To compare social intelligence of male and female school teachers with respect to patience, cooperativeness, sensitivity, curiosity, tactfulness, sense of humour, memory dimension.
- To compare social intelligence of rural and urban school teachers with respect to patience, cooperativeness, sensitivity, curiosity, tactfulness, sense of humour, memory dimension.

Director, Silicobyte Katni Degree College, Dikshabhumi Campus, Adharkap, Katni (M.P.)

Hypothesis

There is no significant difference between social intelligence of male and female teachers.

There is no significant difference between social intelligence of rural and urban teachers.

METHOD

Sample

The sample of present study comprised of 200 teachers. Out of which 100 are rural and 100 are urban. In each category 50 teachers are male and 50 are female.

Tool

A self-prepared test paper was used to measure social intelligence among teachers.

Statistical Technique

The analysis of data was done by calculating percentile tool.

Finding and Analysis

TABLE 1

Status of Social Intelligence Gender wise among Teachers

Social Intelligence	No. of Teachers (%)			
	Gender	Social Intelligence Value 151-200	Social Intelligence Value 101-150	Social Intelligence Value 51-100
Tolerance	Male	14	32	54
	Female	29	42	29
Patience	Male	22	41	37
	Female	26	43	31
Cooperativeness	Male	33	46	21
	Female	38	49	13
Sensitivity	Male	19	34	47
	Female	33	51	16
Tactfulness	Male	28	37	35
	Female	26	36	38
Sense of Humour	Male	24	47	29
	Female	23	49	28

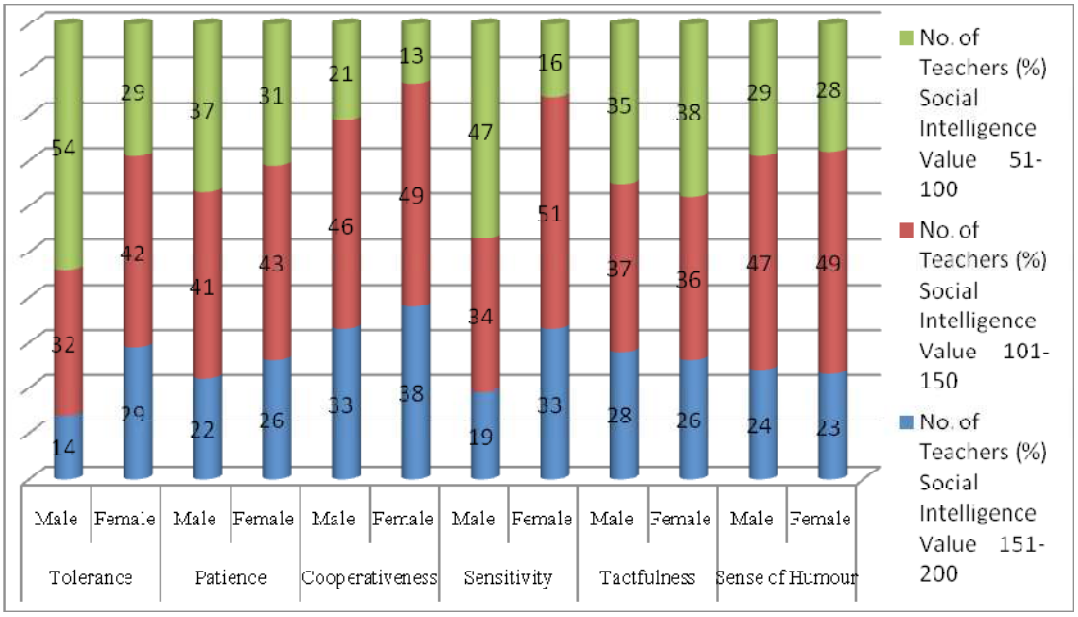

Chart 1: Status of Social Intelligence Gender wise among Teachers

TABLE 2

Status of Social Intelligence Locality wise Among Teachers

		No. of Teachers (%)		
Social Intelligence	**Gender**	**Social Intelligence Value 151-200**	**Social Intelligence Value 101-150**	**Social Intelligence Value 51-100**
Tolerance	Rural	34	31	35
	Urban	41	36	23
Patience	Rural	35	34	31
	Urban	44	37	19
Cooperativeness	Rural	52	39	9
	Urban	47	41	12
Sensitivity	Rural	38	44	18
	Urban	42	47	11
Tactfulness	Rural	26	33	41
	Urban	38	41	21
Sense of Humour	Rural	22	35	43
	Urban	34	43	23

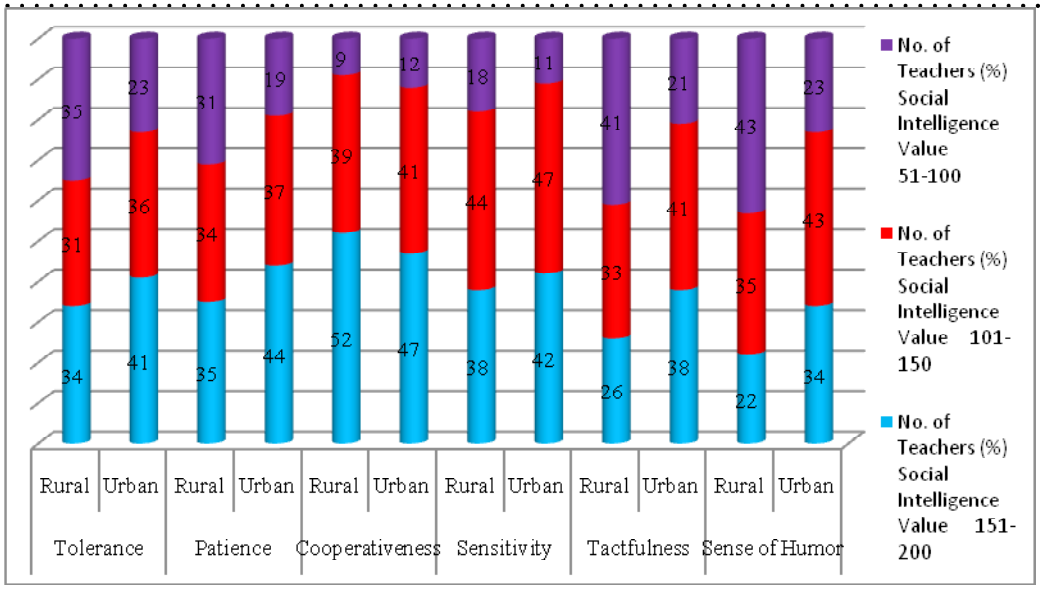

Chart 2 : Status of Social Intelligence Locality wise Among Teachers

Comparative analysis of male and female teachers' related result shows that female teachers have more tolerance power than male teachers. 29% female teachers have 151-200 value, 42% have 101-150 value and 29% have low value. For social intelligence patience, 26% female teachers have high, 43% medium and 31% low value while male have 22%, 41% and 37% respectively. For cooperativeness male teachers have high value 38% possess 151-200 range, 49% medium and 13% minimum value. For sensitivity female teachers have high value. 33% have marked with high value, 51% medium and only 16% low value. Tactfulness found greater in male teachers. 28% have high value, 37% have medium while 35% low value. For this social intelligence difference between male and female is slight. For sense of humour, difference between male and female is not significant. Male teachers have found higher values *i.e.*, 24% have high value, 47% medium value. Hence hypothesis 1 there is no significant difference in the level of social intelligence of male and female teachers is rejected.

Urban teacher has high tolerance power rather than rural teachers. Data shows that 41% urban teacher has high value, 36% has medium and 23% low value. For patience, 44% urban has high value, 37% medium and 19% low value while rural has 35%, 34% and 31% respectively. Cooperativeness has found high value for rural teachers *i.e.*, 52% high, 39% medium and 9% low value. Sensitivity observed high in urban teachers. 42%, 47% and 11% teachers have high, medium and low value respectively. Urban teachers have high tactfulness. 38% urban teachers has high value in comparison of 26% of urban teachers, 41% urban teachers has medium value in comparison of 33% of rural. Sense of humour is found more in urban teachers than rural teachers. Its calculated value for urban is 34% as high, 43% average and 23% low value. Comparison of locality wise social intelligence indicates that obtained value is different for rural

and urban teachers, thus hypothesis there is no significant difference between social intelligence of rural and urban teachers is rejected.

CONCLUSION

Teaching profession is very dignified profession in the society. Teachers are considered as role models and mould the students in class room with efforts and abilities. The future of any nation builds in the classroom by hands of competent, socially adjusted and good mental health teachers. That's why social intelligence is important for the teachers to interact students effectively.

REFERENCES

Lugt, R.V., Classroom, Classroom Crucial, Emotional : Social Intelligence and Student Participation, www. Westpoint.edu, 2012.

Mahabobvali, K. & Vijay Vardhini, S., Social Intelligence of Secondary School Teachers with respect to their gender and age, International Journal of Indian Psychology, Vol.3, Issue 2, 2016.

Sharma, S., Social Intelligence of Students Teachers, Psycho Lingua, 42(1), 2012.

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2018, Vol. (2) No. 1 & 2 : 10-14
© Apollo Journal of Educational Research

VALUES IN EVERYDAY LIFE

Prof. Sushil Kumar Goel

ABSTRACT

"Equal rights for all", "Excellence deserves admiration", and "People should be treated with respect and dignity" are representative of values. Values tend to influence attitudes and behaviour. Types of values include ethical/moral values, doctrinal/ideological (religious, political) values, social values, and aesthetic values. It is debated whether some values that are not clearly physiologically determined, such as altruism, are intrinsic, and whether some, such as acquisitiveness, should be classified as vices or virtues. Values have been studied in various disciplines : anthropology, behavioural economics, business ethics, corporate governance, moral philosophy, political sciences, social psychology, sociology and theology.

INTRODUCTION

Values may help solve common human problems for survival by comparative rankings of value, the results of which provide answers to questions of why people do what they do and in what order they choose to do them.

We are all human beings and by the virtue of being human, we are entitled to certain basic and inalienable rights which are known as **Human Rights**. These rights come into existence at the time of birth of an individual. Everyone in the world wants justice. Sometimes they receive it, sometimes they don't. This is because there are times when they let inhuman values interfere with human values.

There is high correlation between human rights education and value education. Textbooks, manuals, teachers' guides and other types of instructional aids used for value education also promote human rights. The basic values : survival, health, happiness, friendship, helping others, insight, awareness, fulfilment, freedom and a sense of fair meaning of life are also part of human rights.

Education is necessarily a process of inculcating values to equip the learner to lead a life that is satisfying to him in accordance with the cherished values and ideals of the society. Philosophers, spiritual leaders and educationists of our country have emphasized the role of education for 'character development', 'bringing out the latent potentialities and inherent qualities' and developing an 'integrated personality' for the well being of the individual and the society at large.

Value education is a hot topic these days. Many schools teach values as subjects but these values have to be captured by the young minds from their teachers first. When teachers fail to embody these values in their behaviour, it is impossible to shape the future citizens and the task of making of a better world becomes difficult. A teacher who is attempting to teach without inspiring the pupil with a desire to learn is hammering on old iron. Thus, teachers have enormous transformative power. If they are intellectually sound and take interest in their jobs then they can guide the students towards excellence or perfection, but if they do not give their heart to their profession, then the whole system is bound to fail.

Today, it is a sad commentary to remark that a kind of atmosphere in which values are nurtured

Divine Life Education Centre,102 AK Gopalan Nagar, Jaipur 302012 & Kusumakar Sukul (Retd. Scientist, DRDO, New Delhi.

or put in practice is not available at most of our academic institutions and neither is advocated by the teachers.

Value education is the process by which people give values to others. It can be an activity that can take place in *any* organisation during which people are assisted by others, who may be older, in a position of authority or are more experienced, to make explicit those values underlying their own behaviour, to assess the effectiveness of these values and associated behaviour for their own and others' long term well-being and to reflect on and acquire other values and behaviour which they recognise as being more effective for long term well-being of self and others.

The purpose of VALUE EDUCATION is to inculcate the values of discipline, peace, speech, self-esteem, time management, contentment, faithfulness, perseverance, truthfulness, hopefulness, etc.

Values education can take place at home, as well as in schools, colleges, universities, jails and voluntary youth organisations. There are two main approaches to values education, some see it as inculcating or transmitting a set of values which often come from societal or religious rules or cultural ethics while others see it as a type of Socratic dialogue where people are gradually brought to their own realisation of what is good behaviours for themselves and their community.

The Indian Government currently promotes Values education in its schools. The Ministry of Human Resource Development has taken strong step to introduce values among schools and teachers training centers. Also India is the land of introducing values. In India from the leadership of B. Shaji Kumar, New Golden Education Trust (NGET) Values based Education has been progressing throughout the country among schools from first standard to twelve Std.

Value-based Education is an approach to teaching that works with values. It creates a strong learning environment that enhances academic attainment, and develops students' social and relationship skills that last throughout their lives. The positive learning environment is achieved through the positive values modelled by staff throughout the school. It quickly liberates teachers and students from the stress of confrontational relationships, which frees up substantial teaching and learning time. It also provides social capacity to students, equipping them with social and relationship skills, intelligences and attitudes to succeed at school and throughout their lives.

Below are a few examples of the impact of VE related to us by schools that have successfully embedded VE in their whole school approach :

- Improved quality of education : VE is a transformative process for improvement.
- Improved climate in education : fearless teaching.
- Specific problem solving : arising from relational deficit such as lack of cohesion, unmanageable stress.
- Individual empowerment : allowing space for pupils to take responsibility.
- School empowerment : providing an opportunity to shape the school/future of education.
- Cultural/social change : providing experience of ethical lifestyle guided by universal positive values.
- Non-confrontational pedagogue : establishing engaged and unified approaches to education and the educational community.

NCERT has brought out framework for schools on Education of values which articulates a comprehensive and pragmatic approach to value education in schools. The framework has been written in response to the need expressed by academics and public alike across the country. The core value concerns suggested in the framework revolve around Health and Hygiene; Responsibility for Self-development; Responsibility towards one's work/duty; Social Responsibility; Love, Care and Compassion; Critical and Creative Thinking; Appreciation for Beauty and Aesthetics.

Under each of these core value concerns are listed a cluster of attitudes and skills which are required to put those values in practice. The grouping is illustrative rather than exhaustive, is overlapping rather than mutual exclusive. These core value concerns provide a frame of reference for schools to prioritize the values to be nurtured in their schools depending on the cultural contexts, needs, resources, background etc. of the schools. There is diversity of contexts in which schools are placed. There are variations in terms of conditions, resources, ideologies, orientation, governance and management systems, etc.

Value education needs to be shared upon from childhood. Again it needs to be blended with curricular and co-curricular activities. We need to focus on the attitude, so as to develop positive attitude in life and shun negativity. Again it is the power of observation to find something good in everything. The power of reasoning as what is good or what is bad, so that one does not indulge in bad things. The real life stories of the persons, who served the humanity and brought revolution need to be narrated right from the childhood. One must be able to distinguish between good and bad and what is the ultimate result is one's life. What is the purpose of life and what good can do and ultimately the truth prevails. Principal or teacher deputed by him should present analysis of news and how the truth prevails. The practice to dispense truth in modern education should again be started, and at least once in a week, children should be encouraged to narrate good thought on human values and topic of the week and quotation of the day should be on notice board and it needs to be discussed and talked about in the class. Yoga and meditation are also very helpful.

To inculcate human values in children the teacher should present himself as model of goodness, consideration and moderation. The teacher needs to practice before preaching. Value education is a very important component of teacher's education. We need to select trained teachers, who can present themselves as role models of goodness for all purposes.

Learning in values and spiritual education helps to overpower grief, tension, disorders and many ailments of mental and physical nature by substituting them with peace, happiness, bliss and prosperity all of which are derived through positive thinking. Values and spiritual education aim at attaining excellence and positive change in life. Spirituality is moving from individual learning to group learning and from personal transformation to group transformation. **Spiritual knowledge** is an essential pre-requisite to attain peace, happiness, power and prosperity in one's worldly existence.

VALUE INCULCATION : AN IMPORTANT FUNCTION OF EDUCATION

Value inculcation has become an important function of education and teachers have to shoulder this responsibility, and synthesize the values of our composite culture and modernity. The diminishing influence of family and other primary groups calls for the use of alternative educational approaches. Education now needs to collaborate with other agencies. Value inculcation has, therefore, to be integrated with all its activities : curricular and co-curricular.

TRUTH

The Vedas proclaim the entire cosmos has emerged from Truth and it will merge back in Truth. Truth is one but spoken differently by the wise (Ekam sat vipra vahudha vadanti)." Truth is the ultimate reality, eternal one. It becomes many pronounces Shurti "Ekoham vahushyama". The world is the manifestation of that Supreme Reality. It is Satyam Jnanam Anantam. To every man born on this earth Truth is verily the visible God. Satyam vada Dharmaam cara proclaims the Mahabharat. Our national motto "Satyameva Jayate" is the immortal words of Mundaka Upanishad. Truth exists amidst all changes. Satyat nasti paro dharma (Truth is held to be the highest Dharma).

Speaking the truth is the behavioural aspect of Truth. Truth purifies mind. Our shastras are

flooded with numberless anecdotes depicting this noble virtue. Right from Rama to Mahatma Gandhi in the 20th Century Truth is upheld most religiously in their lives. King Harischandra sacrificed his wife, son and kingdom for the sake of Truth. This story had lasting imprints in the minds of the young Mohandas who later became Mahatma Gandhi, startled the world by defeating the mighty British Raj with his unique weapon of Satyagraha. Truth is the divine principle which is the core of all existence.

DHARMA

Ethical expression is very fundamental to man's expression. This ethical sense what India calls by her significant term "Dharma" which is defined in the Mahabharat. Mere intellectual growth without ethical growth is dangerous. Out of four fundamental aspirations of man outlined by the Indian Philosophers, Dharma stands foremost. It is the commanding Purushartha. It is the characteristic emblem of human being which differentiates him from an animal. It represents the moral principle which gives worth to human life. Truth in action is described as Dharma. The Brihadaranyak Upanishad identifies Dharma with Truth– "verily that which is Justice (Dharma) is Truth… verily both are same." Dharma is also used to denote the general good sense of one who wishes and works for the welfare of others. The logic of such concept of Dharma seems to lead to one to the feeling of Universal brotherhood.

Dharma is synonymous with righteous conduct. It is extremely important in checking the unbridled impulses of man. A man who has control over his senses is truly righteous. He is not guided by the desires but seeks the desirable. The concept of 'Shreya' and 'Preya' in Katha Upanishad beautifully ponders through anecdote of Yama and Nachiketa. Its famous line "Na vittena tarpaniyo manusyah" reflects Nachiketa's resolve to discard the pleasant and seek good. The underlying implication here is man is easily tempted by luster of easy glamour of life than the steep narrow road of virtue or Dharma. In Brihadaranyaka Upanishad all virtues are brought together under three "das" which are heard in the voice of Thunder, namely 'dama' or self-restraint, 'dana' or sacrifice, 'daya or compassion. Sankar makes out that gods have desire (kama), man suffers from greed (lobha) and demons from anger (krodha). By practice of the three injunctions we free ourselves from the sway of craving, greed and anger.

Dharma protects those who protects Dharma. The Pandavas in the Mahabharat are the glaring examples who did not forsake the path of Dharma even in trying times. Ultimately they became victorious. Dharma does not mean observance of certain tradition and formalities. It is the harmony of thought, word and deed which results in the purification of these facilities. Our culture emphasizes on Trikaran suddhi or purification of three instruments of action.

PEACE

Peace is a state of mind and this is gained when man is on the righteous path. The ancient sages not only wished for the peace of mankind but for the peace of all, which is reflected in the Shanti mantra of the Vedas Enjoyment alone never leads to the peace of mind. In sacrifice lies the peace ("Tyagat shanty nirantaram"). Peace comes when man thinks of others' peace and welfare. "Lokasamasta sukhinmastu" pronounces a Vedic prayer wishing happiness to all. The catholic spirit of our culture has accommodated plurality of doctrines, faiths peacefully. Peace is the basic nature and feature of every human soul. The most pure state of peace is the true experience of inner peace. Peace is a state of our inner self which is experienced through the practice of meditation. It is a qualitative energy. Peace is an inner silence full of power of truth. An experience of peace naturally spreads the vibrations of peace. In order to experience the power of silence one should have pure thoughts. Pure thoughts have total energy. Peace is a Godly power. Contentment is one aspect of peace that brings happiness. It is the pure thoughts, pure feelings and pure vibrations that generate peace. Peace is the positive concentration of our mind. The power of

concentration is very essential in order to experience mental peace. The morning time of Amritvela is the best time of experiencing peace and sending the vibrations of peace.

LOVE

Love is the basis of all values. Indian cultures believes in the dictum of "Live and let leave" due to its love for the entire creation and respect for every existence. Love is unconditional positive regard for good of others. Our prayer is 'Sarve bhavantu sukhnah' is an eloquent example of such noble thought. The Parsees fled India after being prosecuted in their own land and they were received with honour here. St. Thomas, a disciple of Jesus Christ came to India in 1st century AD to preach Christianity. It is the love of Bharatiyas which not only tolerated faiths but could respect them also. The emperor Asoka typifies this ancient spirit when he proclaims in one of his rock edicts."King Piyadashi honours men of all faiths, members of religious orders and laymen alike with gifts and various marks of esteem." The Mughal emperor Akbar echoes this spirit in his concept of 'Din-e-illahi' (Divine faith). Thus Indian culture carries this spirit of universal love through ages.

Love is that spiritual power which creates the vibrations of purity and peace for the whole human race. Spiritual love fills man with spiritual power in any time of need. Spiritual love empowers one in all manners. Love is the power of affection which increases one's self-confidence and helps to connect with the Supreme Soul, the Almighty God. Love does not consist in the hope of receiving but it is an attitude of giving. Loving others means respecting their emotions. Faith and confidence are the forms of true love. Faith turns the impossible into possible. Love brings peace and sobriety in life and this leads to happiness and bliss. Spiritual love leads to peace, power and happiness as it enhances the power of soul. When the soul is satisfied with the divine experience of love, the negative tendencies of desire, lust, expectations, and deprivation are eliminated. The pure and elevated form of love is spiritual love.

NON-VIOLENCE

Non-violence is the unbounded, most expansive form of Love. Ahimsa is non-injury through mind, speech and body. From time immemorial Ahimsa has been considered highest dharma. ("Ahimsa paramo dharma") Ahimsa has two sides negative and positive. On negative side it means abstaining from harming anyone. Positively it implies Universal love. It is not just withdrawal from certain temptations and self-denial of certain norms that connotes non-violence but cultivation of certain virtues in the behaviour of man. In this type of non-violence love becomes the prime-mover of the cultivated man. In 20th century the world witnessed the unique impact of Truth and non-violence in the life of Mahatma Gandhi who showed how this principle can be extended from the conduct of individual to that of nation. In his words, "my life is dedicated to the service of India through the religion of non-violence which I believe is the root of the Hinduism (Advesta sarva bhutanam maitra karuna evaca). For Gandhi, Truth is the Reality which is more potent than the sword. Truth and non-violence are related to each other as two sides of one coin. If we recognize the superiority of the spirit to the matter and the supremacy of the moral law we must be able to overcome evil through moral power. A man who believes that one Truth pervades in everything and everywhere, can only resort to non-violence. **For Mahatma Gandhi,** non-violence and truth are the most powerful tools to attain peace. According to him, all social, political and economic conflicts can be resolved peacefully.

From the Vedas, Upanishads, Gautam Buddha, Mahavira, Guru Nanak to Mahatma Gandhi the message is one and same. The five values when manifest completely make a man complete. There is an organic link between human values and human personality. Man should not be satiated with anna only, his destination is ananda. Life is a continuous journey from Anna (body) to Ananda (Bliss), that our culture declares boldly. Because man has infinite possibilities within him he should strive continuously to blossom completely.

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2018, Vol. (2) No. 1 & 2 : 15-18
© Apollo Journal of Educational Research

LIFE SKILLS AND YOUTH EMPOWEREMENT

Gisha George* and Dr. Lissy Koshi**

ABSTRACT

All parents want their children to be confident and to become successful, but it's not something that will 'just happen.' There are certain skills that everybody needs to learn to be successful and independent, but again those skills are not something that all people get to know automatically. The skills must be learned through practice. The sad truth is that many young adults enter into the real world with no idea of how to navigate, lose their confidence, and finally end up in distress. This paper discusses the significance of life skills and how youth can be empowered by life skill training.

INTRODUCTION

Although young people around the world are more interested in pursuing formal education ; after graduation, they often find that they are not adequately prepared for the world of work. Because skills relevant to key growth sectors of the modern economy are often not covered in traditional educational systems, employers often find a mismatch between the competencies youth need to succeed in the workplace and those they actually possess.

Today's competitive world demands trained, certified and skilled manpower to address the challenges of growth and converting these challenges into opportunities. India has one of the youngest populations in the world and a very large pool of young English-speaking people. Therefore, it has the potential to meet the skill needs of other countries and also cater to its own demand for skilled manpower. Ironically, most industries in India are currently struggling with scarcity of skilled labour. Although more than 40 million people are registered in employment exchanges, only 0.2 million get jobs. With current and expected economic growth, this challenge is going to only increase further, since more than 75% of new job opportunities are expected to be "skill-based. The Government is therefore strongly emphasizing on upgrading people's skills by providing vocational education and training to them. It has formulated the National Policy on Skill Development and set a target for providing skills to 500 million people by 2022. This critical situation can be lessened by providing life skill training.

There is a growing awareness of the need for life skill training among youth. Schools and universities are increasingly adding life skills as a part of the formal curriculum, as an afterschool activity, or as a part of career guidance services.

Life Skills Training and Employability

There is growing evidence that "both cognitive and non-cognitive abilities determine social and economic success" for young people and adults. As a result, comprehensive training programs that combine in-class employability and life skills lessons with hands-on practical experience "have higher rates of success, with success defined as improving the probability of obtaining employment and higher earnings."

Life skills programs have been shown to :

- **Improve economic outcomes for youth** : Life skills programs have been shown to increase the earning potential of young people. In addition, they position youth to obtain jobs

***Research Scholar, Research and Development Centre, Bharathiar University, Coimbatore-641046**
****Assistant Professor, Mount Carmel College of Teacher Education for Women, Kottayam-686004**

of better quality and formality, measured by written contracts and employer-paid insurance.

- **Improve education outcomes for youth** : Recent research has demonstrated that when young people are provided interventions that include non-academic supports in social-cognitive skills, learning outcomes improve as do completion/graduation rates.
- **Increase employer satisfaction with new hires** : Life skills programs strengthen young people's abilities in many areas that employers consider particularly important when hiring new employees. Employers often report a higher level of satisfaction with entry-level employees who have gone through life skills training than those who have not.
- **Change personal behaviour and social attitudes of youth** : Life skills programs allow youth to create a life plan and equip them with the skills to take steps towards achieving their goals. They also help young people to better understand healthy personal behaviours, thus decreasing outcomes such as teen pregnancies, drug and alcohol use, and interpersonal violence. As a result, they help to increase young people's sense of self-esteem and expectations for their future and the future of their children.

These findings are very encouraging and demonstrate that life skills programs can address both the need of the youth and that of the employers apart from the great job of improving the quality of life.

Revolutionary Changes to be implemented in the Curriculum

Life skills training is most effective when it offers young people a foundational basis to be healthy and productive members of their communities. Design life skill program aiming at increasing youth employability will be to identify or create a curriculum that :

- Encompasses key or "core" life skills
- Emphasizes workplace-readiness skills and behaviours
- Is demand-driven by incorporating the skills employers regard as paramount for hiring and also for job-success
- Is flexible enough to incorporate additional life skills identified through consultation with other key stakeholders (training institutes, government ministries, educators, etc.)

It is essential that the core content of the curriculum is designed to meet youth needs, support positive behavioural changes, and increase youth employability, whether in a formal work setting or as independent entrepreneurs. Life skills curriculum should balance a combination of personal skill that all youth need in their daily life with specific workplace-readiness skills youth need for future employment.

Core Life Skills that should be instilled through a Life Skills Training Program are self-confidence respecting self and others, interpersonal skills (empathy, compassion), managing emotions, personal responsibility (including dependability, integrity, and work ethics), positive attitude and self-motivation, conflict management, teamwork, communication (listening, verbal, and written),cooperation and teamwork, creative thinking, critical thinking and problem solving, decision making, workplace behaviour and protocols, planning and organizational skills (including time and financial management), customer-relations skills, research skills, financial literacy, personal leadership, workplace rights and responsibilities, business plan development, personal leadership, management skills, risk-taking, coping with failure, market research skills and the like.

Significance of interactive teaching methodologies

When it comes to life skills training, merely sharing information is not sufficient for youth to discuss, question, and internalize the

competencies taught in order to use them in their own lives. Youth will quickly lose motivation and cease attending training if they are not engaged in the lessons and able to see the direct connection with their personal experiences. Hence, participatory training pedagogy is key to inspiring youth and increasing life skills training's impact. Most widely used life skills curricula are built upon these general principles of education.

To be highly effective, life skills training methodologies should be flexible enough to adapt to the many learning styles and speeds that exist in any classroom. Training design should reflect the educational principle that "learning is both an individual and a group process," providing a blend of small-group activities and space for individual reflection. Most importantly, in-class life skills instruction should be complemented by opportunities for youth to practice their skills outside of class and in real-life situations. Unfortunately, these teaching methodologies can be difficult to adapt and use consistently for many trainers who are used to a more traditional lecture-based education system.

To be most effective, life skills lessons should be designed as workshops, where every participant plays an active role, rather than lectures, which typically revolve around the instructor. Participants learn best and are more likely to change their own behaviour if they see a role model – in this case the trainer – modelling each life skill in his/her interactions with youth during the lesson. Youth benefit most from instruction involving peer learning, practical application of skills taught, and self-reflection.

Therefore it is highly recommended that each life skill lesson be articulated around the following three main pillars :

- **Information :** The first segment of each lesson should focus on giving youth basic information about the "behaviour of the day" or life skill that will be covered in that lesson. This should grab participants' attention, contextualize the specific life skill in the framework of their daily life, and show how it can influence their behaviour.
- **Practice :** Youth participants should be given in-class time to grapple with the ideas, terminology, and behaviours related to each skill. They should also be able to brainstorm and discuss the implications of a life skill for themselves and others in order to fully internalize its meaning and importance. Trainers should facilitate in-class discussions and practice, while participants take center stage and become the main actors in their own behaviour change process. In-class Practice prepares youth for real-life situations in a safe and comfortable environment.
- **Self-reflection :** Finally, participants should have time for personal reflection and analysis to help them transition from the classroom context to how they will apply their new knowledge in their own lives. Youth Participants should take what they have learned and practiced, reflect on it, and imagine how they could use it in their lives.

CONCLUSION

Because the majority of life skills programs are designed with the ultimate goal of improving quality of life and employability outcomes in mind, it is critical that organizations engage local networks during the initial curriculum design and program implementation phases. Local employers, along with other stakeholders, can identify which skills are most needed for youth to gain employment and to keep their positions. They can also provide valuable feedback to improve training as the program is ongoing. Local entrepreneurs can validate or suggest key personal skills youth will need to start their own business. Moreover, by playing an influential role in the local network of organizations and

businesses, organizations can help to provide opportunities for your youth to succeed in the workplace and in their communities.

When it comes to life skills training, the methods of delivery are very important, perhaps much equally as the curriculum itself. Participants should have the opportunity to practice the skills they are learning either in groups or individually in the classroom, as well as outside the classroom, in their community, with their friends, family, and at work for it to have a substantial improvement in the quality of their lives.

REFERENCES

Angel-Urdinola, Diego F., Semlali, Amina and Stefanie Brodman (2010). Non-Public Provision of Active Labour Market Programs in Arab-Mediterranean Countries : an Inventory of Youth Programs. World Bank - SP Discussion Paper No.1005. Washington, DC : World Bank.

Angel-Urdinola, Diego F., Kuddo, Arvo and Amina Semlali, eds. (2013). Building Effective Employment Programs for Unemployed Youth in the Middle-East and North Africa. Directions in Development. Washington DC : World Bank.

Assaad, Ragui and Farzaneh Roudi-Faimi (2007). Youth in the Middle East and North Africa : Demographic Opportunity or Challenge ? Washington, DC : Population Reference Bureau.

Benson, P. L., & Scales, P. C. (2011). Developmental assets. In R. J. R. Levesque (Ed.), Encyclopeadia of adolescence (pp. 667-683). New York : Springer.

Duckworth, A. L., Peterson, C., Matthews, M. D., & Kelly, D. R. (2007). Grit : Perseverance and passion for long-termgoals. *Journal of Personality and Social Psychology*, 92(6), 1087-1101.

Hansen, Rick (2006). British Columbia Life Skills Organizer : An Introduction to B.C. Life Skills Program – A Resource.

Mincemoyer, Claudia C. and Daniel Perkins (2005).*Measuring the impact of youth development programs : A national on-line youth life skills evaluation system*. NC State University – Department of 4-H Youth Development and Family and Consumer Sciences. The Forum for Family and Consumer Issues, October 2005, Vol. 10, No. 2. http://ncsu.edu/ffci/publications/2005/v10-n2-2005-october/pa-1-measuring.php

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2018, Vol. (2) No. 1 & 2 : 19-22
©Apollo Journal of Educational Research

NATURE STUDY CAMP AND SOCIAL HEALTH : AN EXPERIENCE

Chaitali G. Sinha

ABSTRACT

Social health indicates how a person interacts with other people; it also shows the consequences or benefits of such interactions in relation to the well being of that person. Social health deals with how people relate to each other, how an individual is able to socialise, how easily a person make friends and maintain it, it goes for other relationships also. A healthy society shows satisfactory and acceptable interaction with other social beings, which brings positive feelings of equality or an equal level of achievement, possession and activities with one's peers. Psychologist and youth development expert believe that children need a variety of experiences in their lives to help them grow into healthy adolescents and adults and also to develop positive behaviours. From the study it can be concluded that a significant growth in connecting people beyond electronic communication can be developed. Increase in competence, creative self-expression, meaningful participation and positive social interactions can be observed. They learn local environment and start to respect the nature as super power, it influence how they behave, help to bond with families and community spirit is developed. Enhance interpersonal relationships and improve socialisation and facilitate group bonding and co-operation. It also reduces formality in relationships and develop awareness between young people. From the study it is recommended that In today's pressure-oriented society, camp provides a non-threatening environment for youth to be active, to develop competence in life skills, to know about and enhance their own abilities and to benefit from meaningful participation in a community. Camps can be considered as the perfect partner to family, school, and community youth activities in helping your child.

Health, Well-Being and Open Space (UK) Literature Review about the benefits of being outdoors., by Nina Morris, OPEN Space Research Centre, 2003.

Key findings of the review : Exposure to the natural environment can have a negative effect on human health. Exposure and access to green spaces can also have a wide range of social, economic, environmental and health benefits.

Urban green spaces are major contributors to the quality of the environment and human health and well-being in inner city and suburban areas. Outdoor recreation provides an opportunity to increase quality of life and heighten social interaction. Physical activity in the natural environment not only aids an increased life-span, greater well-being, fewer symptoms of depression, lower rates of smoking and substance misuse but also an increased ability to function better at work and home. Health Walk and Green Gym participants cited they stated being 'in the countryside' and 'contact with nature' as key motivating factors to be active.

Wild Adventure Space (UK) Literature Review by Penny Travlou, OPENSpace Research Centre (2006).

"Experience of the outdoors and wilderness has the potential to confer a multitude of benefits on young people's physical development, emotional and mental health and well being and societal development. Mental health and wellbeing

Assistant Professor, Arihant College of Education, Pune (Maharastra).

benefits from play in natural settings appear to be long-term, realised in the form of emotional stability in young adulthood."

Youth Development Outcomes of the Camp Experiencea study by Philliber Research Associates and the American Camping Association, 2005.

Between 2001 and 2004 the American Camp Association conducted research with over 5000 families from 80 ACA-Accredited camps to determine the outcomes of the camp experience as expressed by parents and children.

Main Findings : Parents, camp staff, and children reported significant growth in : Self-esteem, Peer relationships, Independence, Adventure and exploration, Leadership, Environmental awareness, Friendship skills, Values and decisions, Social comfort, Spirituality.

INTRODUCTION

Social health usually refers to two different concepts though they are interrelated to each other. On one hand it refers to the health of a individual on the basis of their ability to interact with others and thrive in social settings, while in other hand it refers to the health of the society and how its members are treated and behave towards each other. Physical health, mental health and social health are the three fundamental and vital forms of health of a person. The physical and mental health is individualised concept, while social health is interconnected with the nature of society.

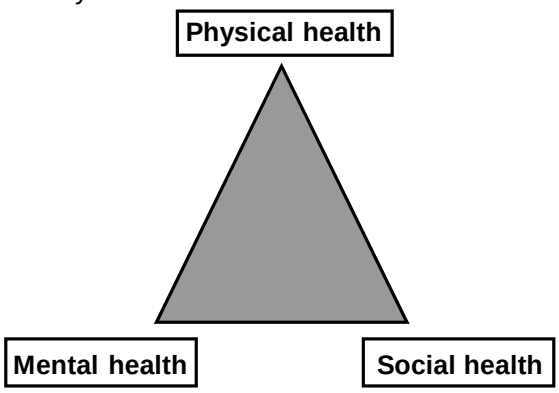

Social health indicates how a person interacts with other people; it also shows the consequences or benefits of such interactions in relation to the well being of that person. Social health deals with how people relate to each other, how an individual is able to socialise, how easily a person make friends and maintain it, it goes for other relationships also.

This term also describe the state of well-being of society and individuals who live and participate in them. It provides a sociological yardstick for measuring how people interact with each other within the moral, legal and social rules and regulations that govern this society.

A healthy society shows satisfactory and acceptable interaction with other social beings, which brings positive feelings of equality or an equal level of achievement, possession and activities with one's peers. It shows the characteristics of being accepted in the society in which we are living in, which involves, norms, values, beliefs and culture, in actual fact when we do things which are supported by our society by knowing what is right or wrong in that way we become socially healthy. The other characteristics are egalitarianism, personal freedom, moral values and spirituality. The most important characteristic of a healthy society that enable its members to live together in peace. This include an absence of major threats to persons or property such as those associated with civil war, high levels of corruption and absence of rule of law. Provide its members with opportunities to flourish – to have more of the things that are good for humans, this includes opportunities to live long and healthy lives, economic opportunities, and opportunities for educational and cultural pursuits, opportunities to make important decisions affecting themselves and their families and opportunities to participate in political processes. Provide its members with a degree of security against potential threats to individual flourishing. The good social health provides members with a degree of personal economic security against accidents, ill-health and unemployment.

Nature study camps : Nature study camps (NSCs) are either overnight or many days camps (depending upon the nature of camps) are camps attended by children without their parents. The thought behind these camps are about the moral, physical and social benefits of nature. In modern time it have become important means for socializing of children. These camps offered a range of activities like camp craft (skills needed to survive in the wild), nature study like bird watching, star gazing, knowledge of flora and fauna, art and crafts like candle making, face painting, tie and dye, greetings making, clay modelling etc. as well as adventure sports such as rock climbing, trekking, rafting etc.

Influence of nature study camp on a child

Psychologist and personality development expert believe that children need a variety of experiences in their lives to help them grow into healthy adolescents and adults and also to shape or modify behaviours.

- A sense of work culture and competency of the child is being developed through such types of NSC.
- A feelings of firm stand for correctness to others and to society,
- A belief in their ability to make decisions in favour of healthy society.
- Development of stable identity at individual and social platform.
- Camps for girls' develops self-reliance.
- Encourage child to get along with others.
- The camp helped the child to have a better idea of what are they good at.
- Development of sportsmanship and leadership quality.
- Learn to listen, interact and relate to others on a deeper level.
- Emphasis is given on self- discovery.
- Provision of active and hands on experiences.
- An opportunity to work on the basis of survival skills.

CONCLUSION

Now-a-day the children are only familiar with the digital world of text messages, facebook and video games, which disturbed the social-interaction pattern altogether and disoriented the social health in many ways. But by the end of camp, a significant growth in connecting people beyond electronic communication has been seen.

These camps also provide 24 hours care to foster physical health and social health development. It increases competence, creative self-expression, meaningful participation and positive social interactions.

The child learns independence, decision making, social and emotional skills, character building and values in an atmosphere of creativity and freedom.

The children learn about local environment and the way they treat it, start to respect the nature as super power. It influences how they behave, help to bond with families and community spirit is developed.

It is also seen that child involved in NSCs are less involved in drug abuse. More aware of their ill effects.

There are strong evidences which indicate that outdoor adventure experiences can enhance interpersonal relationships and improve socialisation and facilitate group bonding and co-operation. It also reduces formality in relationships and develops awareness among youth or children. But these beneficial outcomes appear to be most lasting when the camps are regular and of long-term.

Recommendation :

(a) It should be noticed in today's pressure-oriented society, camp provides a non-threatening environment for youth

- to be active,
- to develop competence in life skills,

- to know about and enhance their own abilities.
- to get benefit from meaningful participation in a community.

(b) Camps can be considered as the one of the perfect partner to family, school, and community for youth activities in helping the child.

(c) Last but not the least that there must be increase in quantity of NSCs and enhancement of its quality to empower social health.

REFERENCES

Falk, Denny. (n.d.). Riding the Third Wave : New and Revised Roles for Social Workers during the Coming Transformation.

Flint, W. (2004). Five E's Unlimited : Sustainable Development Solutions. Retrieved November 28, 2004 from http://www.eeeee.net/features.htm.

Korton, D. (n.d.) When Corporations Rule The World. Good Living, 19. Retrieved November 7, 2004 from http://www.boggscenter.org/korton.htm. http://www.ucl.ac.uk/whitehallII/pdf/FairSocietyHealthyLives.pdf Health, Well-Being and Open Space (UK)

Literature Review about the benefits of being outdoors., by Nina Morris, OPEN Space Research Centre, 2003 http://www.childrenandnature.org/news/detail/summer_ camp_provides_ many_ benefits/#sthash. Y4mf6LRb. dpuf

Van Slyck, Abigail A. (2002). "Housing the Happy Camper." *Minnesota.* Changing Minds : The Lasting Impact of School Trips (UK) A study of the long-term impact of sustained relationships between schools and the National Trust via the Guardianship scheme by Alan Peacock, Honorary Research Fellow, The Innovation Centre, University of Exeter, February 2006.

A Review of Research on Outdoor Learning by Mark Rickinson *et al* Field Studies Council, 2004.

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2018, Vol. (2) No. 1 & 2 : 23-29
© Apollo Journal of Educational Research

THE EFFECTIVENESS OF MULTIMEDIA PACKAGE IN LEARNING VOCABULARY IN ENGLISH

Mrs. Kuldeep Kaur Juneja

ABSTRACT

Emotion is the magic word that makes human life dynamic and expressive in the society. By adding colour, spice, lyric and adventure to our lives, emotions connect one's mental and physical activities. Man's life is tailored on the foundation of his emotions. This signifies the importance of possessing high level of emotional maturity for success in all walks of life. Emotional Maturity is the ability to make good, positive, healthy choices during the challenges of life. An emotionally mature person learns to recognize his own feelings and those of others motivate him, manage emotions well in himself and in his relationships. In essence, emotional maturity means controlling our emotions rather than allowing our emotions to control us.

INTRODUCTION

Language is an essential part of human life. Everyone from birth to death makes use of it. Besides, it is a means of communication and social control. Block and Trager says, "a language is a system of arbitrary vocal symbols by means of which a social group operates." "Ideas and feelings are realization but when these are revealed through mouth is known as language." – Plato

'Language teaching' implies three operations language teaching and learning the purpose of language teaching is to facilitate language learning. There are two basic agents under teaching process teacher and students. Teaching is an art and learning is a science.

Language is a science and literature is an art. Language is a means or verbal medium for expression or communicating ideas, feelings, experiences and realizations. Language requires four basic skills– speaking, writing, reading and listening. There are several languages all over the world for communicating their feeling, ideas, experiences and realizations. Languages are the means, not the end.

"Language is a means of social control", language is the god given gift or boon for human being.

The Indian people have been using English as a Second language for the past two centuries. English is the "lingua franca of the world".

Multimedia

The word multimedia is widely spread in contemporary world. Many people use it very now and then though only few realize what it means. Basically, it has lot to do with a word media, the word refers to medium and comes from latin medius where it stands for middle. Nowadays this word is usually used in plural media that deals with communication among by different means.

Thus, we can define media as human communication, by visual and sound means. Using word visual we do not mean only illustrational pictures or something to that. Here we should consider scrolling, writing and signing as well. Multimedia usually implies mass information (communication) means. Currently words multimedia and media are spread across different areas of human activity more than ever and thus they may refer to various subjects.

Assistant Professor (English), Lokmanya Tilak Education College, kuldpjuneja@gmail.com

Educational Benefits : Multimedia Tools

(from an educator's perspective) :

- Provide students with opportunities to represent and express their prior knowledge.
- Allow students to functions as designers, using tools for analyzing the world, accessing and interpreting information, organizing their personal knowledge, and representing what they know to others.
- Multimedia applications engage students and provide valuable learning opportunities.
- Empower students to create and design rather than " absorbing representatives created by others".
- "Encourages deep reflective thinking".
- Create personally meaningful learning opportunities.

Advantages of Multimedia

IBM (Hall & Baumgartnar, 1991) suggested many advantages (according to their view) of multimedia :

- Increases learning effectiveness.
- Is more appealing over traditional, lecture based learning methods.
- Offers significant potential in improving personal communication, education and training efforts.
- Reduces training costs.
- Is easy to use.
- Tailors information to the individual.
- Provides high quality images and audios.
- Offers system portability.
- Frees the teacher from routine tasks.
- Gathers information about study result of the students.
- Multimedia enhances text only presentation by adding interesting compelling visuals.
- Audiences are more attentive to multimedia messages than traditional presentations done with slide or over head transparencies.
- People are more interested in multimedia messages which combine the elements of text, audio, graphics and video.
- Communication research has shown that the combination of communication modes (aural and visual) offers greater understanding and retention of information.

Teaching of Vocabulary

A vocabulary is a list of words. Different scholars have their own views.

According to Strang, "The most important criterion of the world is that it is the smallest unit that can in ordinary usage in function alone as a sentence."

Getting pupils acquainted with new words is important because, in the words of H. W. Beecher, "words are pegs to hang videos on". Besides, one of the aims of teaching English in India is to enable students to us it as library language. For this, they need to know a large vocabulary which includes :

- Active or precognitive vocabulary.
- Passive or receptive vocabulary.

Educational Technology

The communication channels are–speaking, listening, writing, and reading, visualizing and observing. The communication strategy and teaching strategies and tactics are selected for achieving objectives and generating structure. The audio-visual teaching aids also play a significant role for this purpose. The learning structure can be effectively generated with the help of audio-visual aids. Therefore, the audio-visual aids are termed as educational technology, *i.e*., hardware approach to teaching. It is an old view that audio-visual aids can be used to make lesson interesting and involving more than one sense in teaching-learning situation. The students can be made active and attentive by the use of technology aids. The research studies have yielded that a particular audio-visual aid may be used to achieve a specific objective of learning or specific learning condition may be created.

Multi-media Approach

It is evident from the term multimedia that more than two media of communication are involved in a learning package. A teaching content of a subject varies in nature, therefore, it can be best presented by employing various media of communication. Moreover, it facilitates the individual variation of the learner. In India, Multimedia approach has been tied. Therefore in NCERT and at the centre of Educational Technology (CET) as the mass media for in service teacher educators.

Utility in Education

Language teachers often use all the media types that go to make up multimedia in this teaching now-a-days. The media types includes pictures, sounds, written texts each of these delivers messages in its own particular way. The particular character of multimedia, to language learning is its delivery ability to exist within the same space. Most people seem to remember efficiently what they have experienced rather than what they have just read. Memory is also connected with images an multimedia provides opportunities to experience language in variety of media each of which can serve to reinforce the other. Strength of computer delivered materials is their ability to create a situation in which learners working alone or in groups can interact with the learning and reference materials. Completing works individually in the computer environment is a private affair and any errors or mistakes are often known to the learner. There is no possible loss of face at errors on what teachers and classmates may presume to be elementary language and presumed to be already mastered. The area of learners reluctant to admit to not having understood may be explored by this kind of non-public domain of this learning form.

Need and Importance

The development of computer-assisted language learning (CALL) has created the opportunity for exploring the effects of the multimedia application for increasing language learner's vocabulary size this study provides an overview the computer assisted language learning (CALL) and detailed a development result of CALL-Multimedia. With the application of constructivism theory, the research explores the use of multimedia software to vocabulary acquisition.

Over the past forty years we have witnessed dramatic changes in the ways of language learning. Its under such multifarious changes that the significant innovation in language education computer- assisted language learning (CALL) has come to the age.

CALL spans wide ranges of activities in language acquisition– listening , speaking, reading and writing and draws nearly all areas of information and communication technology (ICT).

About This Study

The purpose of the study is to develop a Multimedia presentation for teaching vocabulary for the students studying in IX standard. The present study being an experimental study with variables like multimedia presentation and learning vocabulary. The study involves pre-test and post-test design with treatment in between. Research evidenced indicates that the multimedia presentation can improve student's performance, therefore multimedia presentation being an innovative approach to teaching learning process endless drill and practice without repetition, and provides immediate feedback to the learner on his/her progress. Thus the study assumes its significance and relevance in the present contest.

Selection of the Subject How and Why ?

Hence there is a need of alternative method based on ICT which can reach mass level in multimedia presentation among them the most popular and convenient is power point presentation or video. By using this tool the components of English Grammar which involve complex ideas and concepts can be taught. Mere verbal approach in sufficient and do not develop images in the minds of the learners, easily. Hence the researcher intends to prepare A POWER POINT PRESENTATION along with video from 'you tube' that may result in better perception than verbal abstractions.

RESEARCH METHODOLOGY

Statement of the Problem : The statement of the problem for research on hand is, therefore, stated in the following words :

"To study the effectiveness of Multimedia package in learning vocabulary in English for High School"

Definitions of Terms Used in the Study

MULTIMEDIA

As the name implies, multimedia is the integration of multiple forms of media. This includes text, graphics, audio, video, etc. For example, a presentation involving audio and video clips would be considered a "multimedia presentation". Educational software that involves animations, sound, and text is called "multimedia software". CDs and DVDs are often considered to be "multimedia formats" since they can store a lot of data and most forms of multimedia require a lot of disk space.

MULTIMEDIA PACKAGE

A multimedia package consists of more than one medium in combination with interactivity that is related to a story, event or information.

Objective :

Main objectives of the study is to determine the implementation aspect, usefulness, effectiveness, emerging trends, status and provision of Multimedia package in learning vocabulary in English in high school classes.

Specific Objectives

1. To find out the problems of conventional methods in learning vocabulary in English.
2. To find out the significant difference in achievement mean score between the pre test of control group and the post test of control group.
3. To find out the significant difference in achievement mean score between the pre test of Experimental group and the post test of Experimental group.
4. To find out the impact of Multimedia package in Learning Vocabulary in English at standard IXth.

   To perform these technology roles well, teachers need to have a level of ICT competence so they can be effective implement Multimedia package in learning specially vocabulary in English in their classrooms.

Hypothesis

On the basis of the previous research studies and insight into general literature, the following hypothesis drawn to be tested by this present study :

The following hypotheses are framed for the study :

(i) Learners of Class IX have problems in learning vocabulary in English

(ii) There is no significant difference in achievement mean score between the pre-test of control group and the post test of control group.

(iii) There is no significant difference in achievement mean score between the pre-test of Experimental group and the post test of Experimental group.

(iv) Multimedia package is more effective than conventional methods in Learning English Vocabulary at High School Standard.

Limitation and Area of Research

The responsibility of the researcher is to see that the study is conducted with maximum care in order to be reliable. However, the following delimitations could not be avoided in the present study.

(i) The study is confined to 60 students of class IX studying in Lokmanya Tilak Higher Secondary School.

The study is confined to learning English vocabulary of the state/central board text book.

Research Methods

Parallel Group Experimental Method will be adopted in the study.

Tools

Researcher will use readymade available worksheets from net as a tool for the study. A self-developed achievement test consisted of worksheets and questionnaire.

Construction of Tools

The investigator's will use self made Achievement test for the pretests and post tests of both control groups and experimental groups. The same question will be used for both pre and post tests to evaluate the pupils' skills of vocabulary in English through objective types of question which carried one mark for each question and contained 50 marks.

Sample

Sixty students of studying in standard IX from Lokmanya Tilak Higher Secondary School, Ujjain will be selected as sample for the study. Thirty students will considered as controlled Group and another thirty will be considered as a tool for study. An achievement test will be used as a tool for the study. An achievement test consisted of work sheet related to the vocabulary.

Data Collection Method

The researcher administered pretest to the pupils with the help of the teachers. The question paper and response sheets will be given to the individual learners and collected and evaluated learning obstacles of the learners can be identified by the pretest. The causes of low achievement by unsuitable methods may found out. Multimedia package will be used in the classroom for learning vocabulary for one week. The posttest will be administered and the effectiveness of the Multimedia package will be found.

DATA ANALYSIS

Analysis of Data

The control group was taught through traditional method of teaching. The experimental group was taught through multimedia. These group were taught for eight days. The data are analyzed on the basis of findings and divided into two categories as follows :

The Qualitative Findings

After completion of the lesson, achievement test was administered to pupils of experimental group and from the achievement scores, means, standard deviation, t' value were calculated as given in tables. The mean and standard deviation for the control group of Class IX-A is shown in Table 1.

TABLE 1

Showing the score analysis of learning achievement in Class IX-A

Sr. No.	Group	Sample	M	SD
1.	Control Group	30	20.83	6.033

The mean and standard deviation for the experimental group of Class IX-B is shown in Table 2.

TABLE 2

Showing the score analysis of learning achievement in class IX-B

Sr. No.	Group	Sample	M	SD
1.	Experimental	30	37.86	4.91

Comparison and Explanation

A comparative study of Mean achievement score of the control group and experimental group.

Sr. No.	Group	Mean	SD	SEd	t- value	
1.	Control	20.83	6.03	1.41	12.07	0.01
2.	Experimental	37.86	4.91		Not Significant	2.66

According to the above, tabulated data, it becomes clear that there is a significant difference between the mean achievement score of the control group and the experimental group. Because the tabulated t-value is much more than the degree of freedom which is 58 that is 2.66.

Representation of Data

Standard Deviation of the Groups :

Sr. No.	Group	Sample	SD
1.	Control Group	30	6.03
2.	Experimental Group	30	4.91

The achievement test was administered to both 'Control Group' and 'Experimental group' after the lesson was taught. Thus, the above table makes it very clear that there is a significant difference between the mean achievement score of the 'control group' and the 'experimental group'.

CONCLUSION

On the whole, the multimedia package was an able partner to enhance the language skills of the students and made easier the way to attain the objectives of second language learning. The final insight that the investigator got at last immediate need for applying technology ICT to English Language Teaching in order to create a real situation, where one can learn a language with real urge and interest. When the students are familiar with this kind of technology aided language learning, definitely they would be able to survive in the future by drawing benefit from online language learning which lays great emphasis on self-study.

Thus, to perform these technology roles well, teachers need to have a level of ICT competence so that there can be effective implementation of multimedia package in learning specially vocabulary in English in their classrooms.

Test of Hypothesis

The findings showed that there is statistically significant difference in scores of achievement tests between the control group students who were taught by traditional method and the experimental group by multimedia package.

Role of the Teacher

The practical complexities of the teacher of second language were largely lessened with the assistance of the Multimedia package. His/her role was reduced in terms of creating situations verbally, explaining the concept and ensuring a thorough comprehension.

Suggestions for further Research

It is well known that 'A picture is worth a thousand words'. A light of the research positive

results, we can also say that 'an multimedia movie' that is well presented is worth a thousand pictures.

It is, therefore, our pedagogical suggestion that language practitioners and classroom teachers take advantage of videos when learners find textual definitions and pictorial aids in vain for comprehending the meanings of vocabulary items.

BIBLIOGRAPHY

Aggarwal, Y.P. and Manisha Mohanty. Effectiveness of Multimedia programmed learning and traditional methods of teaching (1998), Indian Educational Review, Vol. 34, No. 2 July, p. 57-66.

Best, J.W. Research in Education (1964), Englewood Chiffst Prentice Hall.

Buch, M.B. Sixth survey of research in education (2007), NCERT, New Delhi.

Hersh C. Waxman, Meng-Fen Lin, Georgett M. Michko, (2003). A Meta Analysis of the effectiveness of teaching and learning with technology of student outcomes.

K. Kamladevi (2011), Mainstreaming the vocabulary through multimedia modules - An analysis, Assistant Professor in English, Sri Sarda College of Education, Tamilnadu.

Reddy, G.L. and Ramar (1997), Effective of Multimedia instruction strategy in teaching science to slow learners.

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2018, Vol. (2) No. 1 & 2 : 30-33
© Apollo Journal of Educational Research

EMERGING ISSUES IN TEACHING: DOES MULTIMEDIA BECOME A THREAT TO TEACHING IN FUTURE?

Dr. Veena Jha* and Aneesh Jose**

ABSTRACT

This paper talks about the multimedia and its merits and demerits. It also get inside the threat to teaching in near future. There are so many fundamentals in teaching. It can begin with content knowledge. It can be with knowledge of materials. Multimedia also plays and important role in our day to day teaching. Most of the class room teaching are depending upon the use of Multimedia these days. But Multimedia lessons or components of lessons delivered via video or image require computers, projectors and other electronic devices depending upon the subject and the amount of original material a teacher creates. Excess of use of multimedia gives very importance to teachers these days. But these days children live in a world where mobile phones, television, social networking sites overpower their minds. So here comes more importance of teachers in the class room. Here the use of multimedia is found in all the levels. So the teachers should be properly trained to overcome the problems of day to day teaching which will bring qualities in classroom teaching than depending up on the Multimedia. It will generate quality educators for the coming generation and educational growth of the country.

INTRODUCTION

The greatest resource and strength in Indian schools is teachers. A good teacher and his/ her classroom can be the difference between a child graduating from high school or dropping out, understanding content or memorizing information, and growing up to earn a decent salary or not. Good teachers shape students for life inside the classroom making them well rounded citizens with a capacity – and often a desire for lifelong learning. Teachers account for the vast majority of expenditure in school education and have the greatest impact on student learning, far outweighing the impact of any other education program of policy. Teachers are accepted as the backbone and greatest assets of education system. Teacher quality and their level of teaching in the classroom are therefore crucial and has been globally accepted to be significantly associated with the quality of education in general and student's learning outcomes in particular.

The Education Commission (1964- 66) of India accepted this influence of teachers in powerful words "No system can rise above the status of its teacher…

Teachers with high quality teaching tend to do and find out more about their own craft, pushing out the boundaries of their learning and teaching, looking for the new topics and ways to teach. However, in order to achieve their maximum potential, ongoing professional development should be implemented in their schedules.

Classroom environment is one of the most important factors affecting student learning. Simply put, students learn better when they view the learning environment as positive and supportive. A positive environment is one in which students feel a sense of belonging, trust others, and feel encouraged to tackle challenges, take risks, and ask questions. Such an environment provides relevant content, clear learning goals and feedback, opportunities to build social skills, and strategies to help students succeed. We can foster effective learning and transform the experience of our students every day by harnessing the power of emotions.

Teaching Skills in the Classroom:

Teachers are pilot of the Classroom. It is on the teachers how they are taking up the class room teaching depending upon their skills at communication, classroom management and appropriate discipline techniques create a positive learning environment. Although being well versed in your subject area is important, being able to communicate necessary skills and concepts in a way students can understand is crucial. Teachers develop skills over time through best practices shaped by other teachers, continuing education and classroom experience.

Teachers who come to the classroom with

***R**
****A**

good communication skills help students fee at ease in their environment. Teacher who are able to use both verbal and non-verbal Communication help students feel at ease in their environment. Teachers who are able to use both verbal and non-verbal communication help students understand what is expected of them and help build their confidence in learning. Body language, positive word reinforcement and appropriate and effective language for discipline creates a classroom that inspires students to try, without fear that they will be judge unfairly.

Classroom Management although not something teachers convey to students, creates a place where students can learn. Classroom management involves knowing the students well and placing them into appropriate learning groups. It also involves having an efficient discipline plan in place that student understand. This gives a clear picture of the teacher's expectations and places the emphasis on rewarding good behavior instead of punishment. It also deals with the use of time throughout the day. Students need to be on task, with very little down time, for the day to run smoothly. Good classroom management means planning well and including both physical activity and independent study to foster good habits in students

Well rounded Assessment of class work lets students know they have lots of opportunities to be successful. Teachers who master this skill have the students who are eager to learn since they know they'll have many chances to do well. Well – rounded assessment involves providing different types of projects and tests so that each kind of learner recognizes something in which they excel. Teaching skills in this are require the teacher to understand his or her students at the beginning of the year. Using prior – year records , standardized tests and notes from former teachers help get thing off to good start and have students learning on the very first day.

Professional development in the area of teaching skills is a must for any teacher wanting to create a positive environment for learning. Professional development challenges teachers to think "outside the box" when it comes to instruction and classroom management. Education is constantly evolving: teachers who commit to the craft of teaching find a more rewarding teaching experience and students who are eager to learn.

Essential Ingredients of Teaching

There are so many fundamentals in teaching. It can begin with content knowledge. It can be with knowledge of materials. One has to study lot before he/she goes to classroom. Teacher should be able to differentiate lessons and assessments to target various learning styles. Teacher should also design their classroom system organization, routine and flow of movement carefully, so class stays productive, avoids chaos, and remains ready for the unexpected. Class room should create a space where students have agency in planning, creative and evaluating. It's more than just walls covered in student work. It should be student centered rather than teacher centered.

What is Multimedia:

Multimedia meant using a slide – tape program, where a beep signified the display of the next 35 mm slide (others might remember flannel boards or 8 – track tapes, but we won't go there) . In a class room we can define as the integration of text graphics, animation , sound and /or video

Using this very broad definition of multimedia , multimedia in the classroom could include Power Point Presentations that are created by the teacher, commercial software (Such as multimedia encyclopedias) that is used for reference or instruction or activities that directly engage the students in using multimedia to construct and convey knowledge. For the purposes of this course, we will focus on the final category- engaging students in the use of multimedia to construct and convey knowledge

Merits of Using Multimedia in the Class room

Multimedia Activities encourage students to work in groups, express their knowledge in multiple ways, solve problems, revise their own work, and construct knowledge. The advantages of integrating multimedia in the classroom are many. Through participation in multimedia activities, students can learn:

1. Real- world skilled related to technology
2. The value of team work
3. Effective collaboration techniques
4. The impact and importance of different media
5. The challenges of communicating to different audiences
6. How to present information in compelling ways
7. Techniques for synthesizing and analyzing complex content
8. The importance of research , planning , and organization skills
9. The significance of presentation and speaking skills
10. How to accept and provide constructive feedback
11. How to express their ideas creatively

The internet is used as a search engine by

lots of motivated teachers. In particular, to search for international projects and other platforms that can offer them a wide range of resources to use and implement in the classroom. Use of more Multimedia through internet in the classroom is an excellent educational approach. It develops creativity, hand skills, autonomy and knowledge. It helps the teacher to learn how the students think. It also develops activities in which the student comes into contact with their social environment while preparing for a future career. Higher quality lessons are taught through greater collaboration between teachers in planning and preparing resources with the help of multimedia. It gives more attractiveness of the activities to the students that makes them be more stimulated. Resources which available online are unlimited. It makes learning process essay for Every One. It gives more safety to young learners that resources based on simulations guarantee in regard to experimenting with young learners.

Draw backs of Excess Use of Multimedia in the Classroom:

Multimedia became an essential part of Class room Teaching. Most of the class room teaching are depending upon the use of Multimedia these days. But Multimedia lessons or components of lessons delivered via video or image require computers, projectors and other electronic devices depending upon the subject and the amount of original material a teacher creates. The expenses associated with quality projectors or computers for every student can be quite high , and the amount of images and videos in a lesson can slow down the delivery and pace of the class as a result. Then designing a multimedia learning experience, the role of the teacher shifts from instructor to facilitator. If a lesson allows students to complete learning at their own pace as they move through stages of learning, classroom management becomes increasingly difficult. This is particularly true if students work in groups to view multimedia sources or share computers. Additionally, students who are not as proficient with technology may have to spend more time learning computer skills to access information than focusing on course materials.

This work introduces research- based principles of learning and addresses issues such as prior knowledge, knowledge organization, motivation, and meta cognition. From the inside flap: Any conversation about effective teaching must begin with a consideration of how students learn. However, instructors may find a gap between resources that focus on the technical research on learning and those that provide practical classroom strategies .How learning works provides the bridge for such a gap.

When designing a multimedia learning experience, the role the teacher shifts from instructor to facilitator. If a lesson allows students to complete learning at their own pace as they move through stages of learning, classroom management becomes increasingly difficult. This is particularly true if students work in groups to view multimedia sources or share computers. Additionally, students who are not as proficient with technology may have to spend more time learning computer skills to access information than focusing on course materials.

Although most students today have been brought up in a world full of multimedia / Hypermedia , being aware and savvy with these outlets is a form of cultural capital that some just don't have. This is just one instance where the technology that is supposed to speed up our daily lives could put some at a major drawback. In addition, some students (and not to mention teachers and parents) may not feel comfortable with the idea of a digital classroom. Another worry is the trust we put into technology. As the age old wisdom goes, where do you draw the line between technology over human interaction and what happens when the technology fails? I 've been in situations where tech fails without warning and entire lessons must be rearranged on the spot.

One of the other Major barriers for the Multimedia is not reaching its full potential in the foundation stage is teacher's attitude. Some see it as a potential tool to aid learning whereas others seem to disagree with the use of technology in early year settings. Some teachers still have lack of the Multimedia skills. Some of them lack of the area in the curriculum and the biggest obstacle is language barrier if they want to enrich the educational content of their subject with use of different digital multimedia resources on internet.

Can Multimedia be a threat to teaching in Future?

Above paragraphs speak about the merits and demerits of Multimedia. No matter how advanced or smart a computer program or a product is, it can never come close to the knowledge and life experience a teacher brings. Several researchers have been conducted and it has been proven time and again that teachers bring about a change which no technology can. A teacher simply does not impart knowledge or information. And teaching is definitely not about facts and figures. A teacher leads, guides, facilitates and mentors a student.

They are role models who set an example to students and drive them towards a brighter future. A good teacher encourages independent thoughts and independent learning. He /She can be a positive influence, can be an inspiration to set and achieve goals. The trust and bond between a teacher and student creates the prefect learning environment, which can never be achieved through virtual learning. Technology is certainly changing the way students learn, but it cannot be termed as a replacement for teachers. High – quality teachers create a class room culture that motivates students and leads them on the path of success. Technology can not inspire help them through their struggles, help them fight back and stand up. Technology can only be a helping factor to learn, but it cannot replace the knowledge and experience that come with a teacher.

Excess of use of multimedia gives very importance to teachers these days. There are lot of other factors which contributes in children's life through teachers. Children learn many things from the school. The use of interactive screen media brings lot of changes in learning, behavior and ability to tackle the situation in children. Even they forget about the family and friends. Pediatric guidelines specifically regarding multimedia use by young children and its problems especially their interactive capabilities, and near ubiquity in their lives.

Other factors that we need to highlight is about lectures of teachers in classroom. These lectures will help them to get it back the importance points in their memory. But these days children live in a world where mobile phones, television, social networking sites overpower their minds. So here comes more importance of teachers in the class room. These days children do not even practice much in writing. Digital devices are being used much outside as well as inside classroom. So children are very poor in writing skills. It will cause great damage to their career. Thus use of Multimedia in classroom should be planned in coming days. Excess use of multimedia can harm students and their learning skills.

CONCLUSION

Education in India is provided by the public sector as well as the private sector, with control and funding coming from different levels. It can be from Central, State or Local Governments. Students are being taught most of the time from Primary level to higher education in class room itself. Here the use of Multimedia is found in all the levels. So the teachers should be properly trained to overcome the problems of day to day teaching which will bring qualities in classroom teaching than depending up on the Multimedia. It will generate quality educators for the coming generation and educational growth of the country. India's improved education system is often cited as one of the main contributors to its economic development. Education is one of the significant factors instrumental to the development of a country. It should be transformed to the needs of the time and changing scenario of the world. It provides an opportunity to critically reflect upon the social, economic, cultural, moral and spiritual issues facing humanity. India needs more efficient and educated people to drive our economy forward.

REFERENCES

Annual Report 1961-62. New Delhi: Ministry of Education

Department of Education (2000) Sarya Shiksha Abhiyan: A programme for Universal Elementary Education

Dr. S. P Chaube, " Philosophical and Sociological Foundation of education"

Dr. S. S Mathur. " A Sociological Approach to Indian Education"

Eagle Computer, http://en: Wikipedia.org /wiki / Eagle_ Computer # Multi – Image_ models

Godbole Madhav, "Elementary Education as a fundamental Right"

Jennifer Story, from Next Online,2002.

Lynch P., Yale University Web Style Manual, Http:/ /info.med.yale.edu/caim/manual/sites/ site_structure.heml

Multi- Media Becomes Multi- Image, 2010-04-30

National Policy of Education 1986 as modified in 1992

R.K Jain, Lifestyle for Total Development: A Unique Guide to Develop Your Personality, New Delhi

S. Deb, children in Agony: A Source Book. New Delhi: Concept Publishing Company. 2006

S. Verma, - Socialization for Survival: Development issues among working street children in India.

Secondary Education Commission (1952)

Teacher Education for Curriculum Renewal, NCF: 2005

The report of the Education Commission of 1964-66 (Kothari Commission)

Vaughan, Stay, 1993, Multimedia: Making It Work (first edition, ISBN 0-07-881869-9), Osborne/ McGraw-Hill, Berkeley, pg. 3.

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2018, Vol. (2) No. 1 & 2 : 34-37
© Apollo Journal of Educational Research

विद्यालयी परिवेश का शिक्षकों के दायित्व बोध पर प्रभाव– एक अध्ययन

डॉ. रंजना श्रीवास्तव

सारांश

प्रत्येक समाज का उन्नयन तथा राष्ट्र निर्माण शिक्षा के कल्याण उत्थान के माध्यम से अध्यापकों द्वारा ही सम्भव होता है। अध्यापक समस्त शैक्षिक पद्यति का केन्द्र होता है। अध्यापक का यह कर्तव्य होता है कि बालकों, समाज तथा राष्ट्र कल्याण हेतु शैक्षिक कार्यक्रमों का दायित्वपूर्ण संचालन करे। सदा सर्वदा से भारत विद्या तथा विद्वानों की जन्म स्थली व कर्मस्थली माना जाता है। अतः भारत वर्ष में अध्यापकों को छात्र के सर्वांगीण विकास के लिए जवाबदेह, जिम्मेदार तथा उत्तरदायी माना जाता रहा है।

प्रस्तावना

भारतवर्ष अनेकता में एकता के मूल मंत्र प स्थापित सर्वधर्म समभाव की मानसिकता व... राष्ट्र है। यहाँ विश्व की अनेक जातियों तथा प्रजातियों के लोग निवास करते रहे हैं। परिणामस्वरूप अनेक धर्म से प्रभावित शिक्षण संस्थान भी भारत में पुष्पित तथा पल्लवित होते है। इनमें सरकारी विद्याल सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालय तथा विभि. सामाजिक दर्शनों से अभिप्रेरित अभिकरणों जै मिशनरी, मुस्लिम, हिन्दू विद्यालय इत्यादि। ... विद्यालयों की अपनी शैक्षणिक तथा दार्शनिक पृष्ठभूमि के कारण विद्यालय परिवेश इतना भिन्न होता है कि दूर से देखकर ही इन विद्यालयों को पहचाना ... सकता है। अतः मन में स्वाभाविक प्रश्न उठते हैं कि क्या इन विद्यालयों में कार्यरत् अध्यापकों के दायित्व बोध में अन्तर है। शैक्षिक तथा सांस्कृतिक विभिन्नता उनके दायित्व बोध को बढ़ाती है या नहीं। ... विभिन्न धर्मों की विचारधारा उनके उसूल, उनव मान्यताएँ शिक्षक की सोच, उसके कार्य, उस... दायित्व निर्वहन को प्रभावित करती है ? यह सवाल सहज ही अपनी ओर ध्यान आकर्षित करता ... एक जिज्ञासु शिक्षक होने के नाते ये तमाम प्रश्न मन में बहुत समय से उथल–पुथल कर र... जिसके परिणामस्वरूप ''विद्यालयी परिवेश ... शिक्षकों के दायित्व बोध पर प्रभाव'' के अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुई

समस्या कथन

"विद्यालयी परिवेश का शिक्षकों के दायित्व बोध पर प्रभाव" : एक अध्ययन

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

1. विद्यालयी परिवेश का शिक्षक के दायित्व बोध पर प्रभाव का अध्ययन करना.
2. धर्म का शिक्षक की कार्यशैली पर प्रभाव जानने का प्रयास करना।
3. धार्मिक विचारधारा की प्रभाविता का मा करना।

परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया गया है-

प्रवक्ता, बी0एड0 विभाग, राजदीप महिला पी0जी0 कॉलेज, कैलहट, मिर्जापुर (उ0प्र0)

विभिन्न विद्यालयी परिवेश में कार्यरत शिक्षकों के दायित्व बोध में सार्थक अन्तर नहीं है

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत अध्ययन अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है। इस अध्ययन की समष्टि वाराणसी शहर के कुल 35 विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षक (अध्यापक व अध्यापिकाएँ) सम्मिलत हैं विद्यालयों का चयन करते समय शोध के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सरकारी, सरकारी मान्यता प्राप्त, विद्या भारती, केन्द्रीय तथा मुस्लिम विद्यालयों के शिक्षकों का उनकी संख्या के अनुपात में चयन किया गया है। इन विद्यालयों के समस्त शिक्षकों में से 500 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा प्रतिदर्श के रूप में किया गया है.

इस शोध कार्य में उपकरण के रूप में डॉ. शशिकान्त त्रिपाठी (2000) द्वारा निर्मित शिक्षक दायित्व बोध प्रश्नावली (TSQR) का उपयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1

विद्यालयी परिवेश के आधार पर शिक्षकों के दायित्व बोध की तुलन

क्र.स.	विद्यालय का प्रकार	N	M	SD	सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालय	सरकारी विद्यालय	विद्या– भारती विद्यालय	केन्द्रीय विद्यालय	क्रिश्चियन विद्यालय	मुस्लिम विद्यालय
1.	सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालय	240	65.15	2-94		**4.37	**4.72	*2.435	**7.4	**3.12
2.	सरकारी विद्यालय	53	60.96	6.84			0.526	**5.1	**7.78	**7.39
3.	विद्या भारती विद्यालय	43	61.42	5.01				**5	**8.15	**5.55
4.	केन्द्रीय विद्यालय	63	67.57	7.74					0.722	0.493
5.	क्रिश्चियन विद्यालय	69	66.08	3.53						1.365
6.	मुस्लिम विद्यालय	32	68.25	5.51						

* 0.05 पर सार्थक ** 0.01 पर सार्थक अन्तर है।

तालिका संख्या 1 के आधार पर आरेख

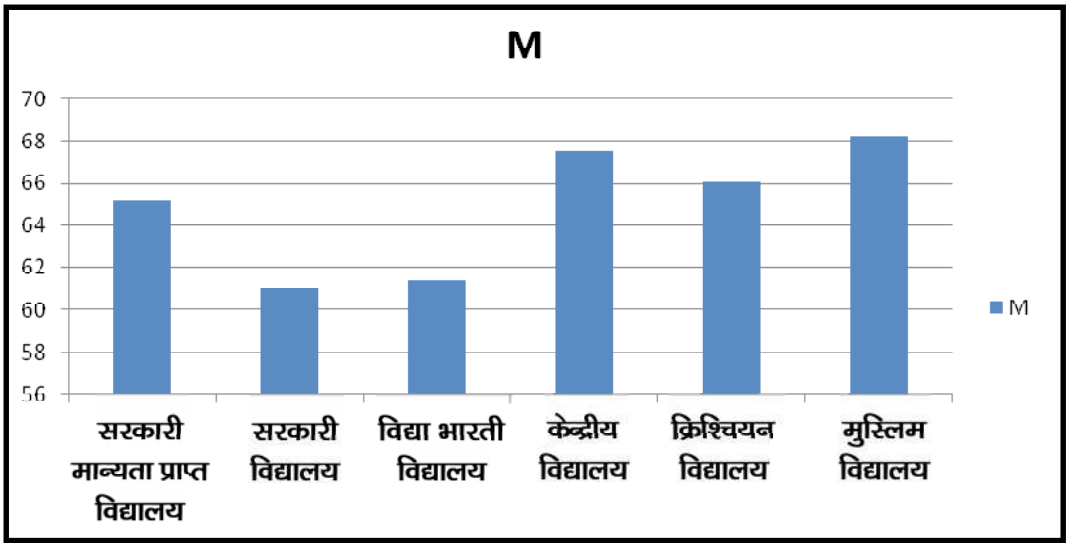

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि–

1. सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालायें में अध्यापनरत अध्यापकों तथा केन्द्रीय विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों के दायित्व बोध के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है। शेष विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों के साथ तुलना करने पर सार्थ अन्तर स्पष्ट होता है.
2. सरकारी विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों की विद्या भारती विद्यालयों में अध्यापन. अध्यापकों के साथ तुलना करने पर सार्थ.. अन्तर प्राप्त नहीं होता है किन्तु अन्य विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों के साथ तुलना करने पर सार्थक अन्तर स्पष्ट होता है.
3. विद्या–भारती विद्यालयों में अध्या..... अध्यापकों की सरकारी विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों के साथ तुलना करने पर सार्थ.. अन्तर प्राप्त नहीं होता है। शेष सभी विद्यालयों के अध्यापकों के साथ तुलना करने पर सार्थक अन्तर स्पष्ट होता है
4. केन्द्रीय विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों की सरकारी मान्यता प्राप्त, क्रिश्चियन तथा मुस्लिम विद्यालयों के अध्यापकों के साथ तुलना करने पर सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं होता है. शेष अन्य विद्यालयों में अध्यापनरत् अध्यापकों के साथ तुलना करने पर उच्चस्तरीय अन्तर प्राप्त होता है।
5. क्रिश्चियन विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों की तुलना केन्द्रीय तथा मुस्लिम विद्यालयों के अध्यापकों के साथ करने पर सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं होता है, शेष अन्य विद्यालयों के साथ तुलना करने पर सार्थक अन्तर प्राप्त होता है।
6. मुस्लिम विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों की तुलना केन्द्रीय तथा मुस्लिम विद्यालयों के अध्यापकों के साथ करने पर सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं होता है, शेष अन्य विद्यालयों के साथ तुलना करने पर सार्थक अन्तर प्राप्त होता है।

उपर्युक्त विश्लेषण स्पष्ट करते हैं कि शू परिकल्पना कुछ स्तरों पर पूर्णतः स्वीकृत होती किन्तु ज्यादातर बिन्दुओं पर अस्वीकृत होती है जो स्पष्ट करते हैं कि विद्यालयी प्रबन्धन का स्वरू तथा परिवेश शिक्षक की कार्यकुशलता व दायित बोध को काफी हद तक प्रभावित करते है। (1973) ने भी राजकीय विद्यालयों के अध्यापकों में दायित्वों के निर्वहन के प्रति उच्च अभिवृत्ति पायी है तथा निजी व मान्यता प्राप्त विद्यालयी अध्यापकों में न्यूनतम अभिवृत्ति पायी है। जबकि कुप्पूस्वामी तथा मेहरा (1968) ने अध्यापकों की वैवाहिव स्थिति तथा धार्मिक अनुदेशनों के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया है। अख्तर (1998) व सुमन कुमारी सिंह (1990) ने अपने अध्यय इस्लामिक शिक्षण व्यवस्था पर अध्ययन करने पर दोनों ने ही अपने अध्ययनों मे यह निष्कर्ष प्राप्त किया था कि मुस्लिम शिक्षण व्यवस्था वाले विद्यालय मुस्लिम सभ्यता व संस्कृति पर अत्यधिक बल देते हैं तथा अपने विद्यार्थियों को श्रेष्ठ कर्तव्यनिष्ठ धर्मनिष्ठ बनाने पर बल देते हैं.

यहाँ यह कहना उचित होगा कि धार्मिव जातिगत शैक्षिक वातावरण अध्यापकों के कर्तव बोध व दायित्व बोध पर कुछ स्तर तक प्रभावि करते हैं परन्तु इसमें शिक्षकों की व्यक्तिगत सोच व धार्मिक कट्टरता भी मुख्य भूमिका निभाती है। मेरे इस परिणाम की पुष्टि शर्मा (1989) व श्रीवास्तव (1979) के अध्ययन के परिणाम भी करते पाण्डेय (2002) ने भी अपने अध्य मिलते–जुलते परिणाम प्राप्त किये हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षक जो भी किसी भी राष्ट्र का निर्माता व सर्वो जिम्मेदार नागरिक होता है उसके धार्मिकत जातीयता से ऊपर उठकर सोचना चाहिए व विद्यालयी प्रबन्ध तंत्र को भी धार्मिक सोच से ऊपर उठ राष्ट्र हित को प्राथमिकता देनी चाहिए जिससे विद्यालय सही मायने में निष्पक्ष विद्या के मन्दिर बन सके महाभारत में उक्त पंक्ति इसी बात का उदाहरण है– ''नास्ति विद्या समं चक्षु नास्ति सत्य समं तपः।।'' को चरितार्थ कर सकें.

संदर्भ ग्रन्थ सूची

अख्तर, परवेज (1998). ''मुस्लिम समुदाय शैक्षिक पिछड़ापन'' (वाराणसी नग आधारित एक समाजवैज्ञानिक अध्य थीसिस बी.एच.यू.।

भारद्वाज, दिनेश चन्द्र (1968). ''विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा'' विनोद पुस्तक मन्दि आगरा ।

पाण्डेय, अमूल कुमार (2002). ''केन्द्रीय एवं राज्य स्तरीय विद्यालयी अध्यापकों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति तथा संस्था संगठनात्मक वातावरण के सम्ब समायोजन समस्याओं का तुलन अध्ययन'' थीसिस महात्मा गाँधी विद्यापीठ वाराणसी, उ0प्र0 ।

शर्मा, बाबू राम (1989). ''उच्च स्तर के अध्यापक व अध्यापिकाओं में दायित्व बोध का तुलनात्मक अध्ययन'' थीसिस बी.एच.यू. ।

सिंह, सुमन कुमारी (1990). ''सल्तनत काल में शिक्षा एवं साहित्य'' थीसिस बी.एच.यू.

Srivastava, Uma (1979). 'A study of sense of responsibility among secondary school teachers' M.Ed. dissertation B.H.U.

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2018, Vol. (2) No. 1 & 2 : 38-41
© Apollo Journal of Educational Research

महिला शिक्षा

दिनेश प्रताप सिंह

सारांश

प्रत्येक समाज के कुछ मुख्य पहलू होते हैं वैसे ही भारतीय समाज के दो मुख्य पहलू हैं, स्त्री व पुरुष। भारतीय समाज में स्त्री का स्थान अति महत्वपूर्ण हमेशा से ही रहा है। स्त्रियों ने सदैव अपना योगदान समाज के पुनर्गठन व रचनात्मकता के लिए दिया है। उनकी सही शक्ति का प्रयोग करके समाज को अति संस्कारित व विकसित बनाया जा सकता है। भारत में स्त्री शिक्षा के स्वरूप में निरन्तर परिवर्तन होता रहा है। यदि स्त्रियों की प्रवल शक्ति व महान् योग्यता का समुचित प्रयोग किया जाये तो राष्ट्र को समुचित व पूर्ण रूप से विकसित किया जा सकता है उनकी शिक्षा के बिना वे राष्ट्रीय जीवन में पूर्ण व समुचित भूमिका का निर्वाह नही कर पायेगी।

वैदिक काल में स्त्री शिक्षा

वैदिक काल में स्त्रियों को वर्णानुसार कर्म क. शिक्षा दी जाती थी। अथर्ववेद में इसके प्रमाण प्राप्त हुए हैं। शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम भाग में ल.. स्थान पर आया है कि प्राचीन ऋषि जहाँ लड़कों को विद्वान् बनाने के यत्न करते थे वहाँ लड़कियों को भी विदुषी बनाते थे। शूद्र वर्ण की स्त्रियों को तो इ. काल में शिक्षा के अधिकार से ही वंचित कर दिय. गया था। मनुस्मृति में कहा गया है कि जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास कर.. .. मनुस्मृति में ही एक अन्य स्थान पर लिखा गया है कि राजा का कर्त्तव्य है कि सब लडकियों ... लड़कों के लिए नियत समय तक ब्रह्मचर्य आश्रम में रहने की व्यवस्था करे

बौद्ध काल में स्त्री शिक्षा

स्त्रियों की शिक्षा के बारे में गौतम बुद्ध .. विचार वैदिक काल से अलग थे। बौद्ध काल में बौद्ध मठों एवं विहारों में सभी स्त्री व पुरुषों को बि किसी भेदभाव के योग्यता के आधार पर प्रवेश की अनुमति प्रदान की गई, इस काल में स्त्रियाँ पुरुषों की भाँति किसी भी प्रकार की शिक्षा प्राप्त सकती थीं। जनश्रुति है कि कवि कालिदास पत्नी विद्योतमा विदुषी महिला थी। उसने अने.. पण्डितों को शास्त्रार्थ में हराया। बाणभट्ट ने कादम्बरी की नायिका महाश्वेता को यज्ञोपवीत धारण करने तथा पवित्र शरीर वाली बताया है। बौद्ध काल .. भाषा, साहित्य, धर्म व दर्शन की शिक्षा स्त्रियॉ प्राप्त करती थी। अतः हम कह सकते हैं कि बौद्ध काल में स्त्रियों की शिक्षा में कुछ प्रगति देखने को मिली।

मुस्लिम काल में स्त्री शिक्षा

मुस्लिम काल का आगमन होने पर उस. ... सभ्यता व सस्क ति भी यहाँ आयी। वे स्त्रियों को केवल पढ़ने–लिखने तक की शिक्षा देने के पक्षधर थे। जिसके परिणामस्वरूप इस युग में स्त्री शिक्षा का स्वरूप अति संकुचित हो गया। मालव. शासक गयासुददीन ने सारंगपुर में एक मदर

प्रवक्ता, आई0एम0आर0, गाजियाबाद

केवल लड़कियों की शिक्षा के लिए अवश्य स्थापित किया गया था परन्तु पहली बात तो यह है कि उस समय पर्दा प्रथा होने के कारण लोग अपनी बच्चियों को घर के बाहर नहीं भेजना चाहते थे। मुस्लि.. काल में रजिया बेगम, गुलबदन बेगम, नूरजहाँ मुमताज, जहाँआरा आदि अरबी व फारसी विद्वान् के रूप में प्रसिद्ध हुई

ब्रिटिश काल में स्त्री शिक्षा

स्त्री शिक्षा की दिशा में पहला प्रयास ईसा.. मिशनरियों ने प्रारम्भ किया भारत में बालिकाओं के लिए अलग से, सबसे पहला स्कूल 181६ ईसाई मिशनरी रेक्रेण्डमे ने चिनसुरा में स्थापि.. किया। 1819 में कैरे ने सीरामपुर में दूसरा विद्यालय स्थापित किया 1820 में डेविड हेयर ने भी कलकत्ता में एक बालिका विद्यालय की स्थापना की। 1821 में इंग्लैण्ड से मिस कुक भारत आयीं। इन्होंने आते ही 8 बालिका विद्यालय की स्थापना की। मिशनरियों से प्रभावित होकर भारतीय भी आगे बढ़े। पूना में महात्मा फूले ने एक बालिका विद्यालय खोला जिसमें वे और उनकी पत्नी पढ़ाते थे। इसके बाद रा राममोहन राय व ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने ... कलकत्ता क्षेत्र में कई बालिका विद्यालयों की स्थापना की।

वुड का घोषणा–पत्र (1854)

19 जुलाई 1854 के इस घोषणा–पत्र ... कुछ इतिहासकारों ने भारतीय शिक्षा का मेग्नाकार्टा भी कहा है। परिणामस्वरूप अनेक स्थानों ... बालिका विद्यालयों की स्थापना की गयी। साथ ही महिला शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं की भी स्थापना की गयी इससे स्त्री शिक्षा के प्रसार में तेजी आई।

हण्टर आयोग (1882)

3 फरवरी, 1882 को लार्ड रिपन ने अपनी कार्यकारिणी समिति के सदस्य विलियम हण्टर की अध्यक्षता में पहले भारतीय शिक्षा आयोग स्थापना की। आयोग ने अपने शब्दों में ति ''मानव संसाधनों के सम्पूर्ण विकास के ... परिवार के सुधार के लिए तथा शैशवावस्था ... अत्यन्त संवेदनशील वर्षों के दौरान बच्चो को गढ़ने के लिए स्त्रियों की शिक्षा तो पुरुषों की शिक्षा से भी अधिक महत्वपूर्ण है।'

सैडलर आयोग ने स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिए कुछ सुझाव भी दिये-

1. छात्राओं का शुल्क कम किया जाये व छात्रवृत्तियाँ भी दी जाएँ।
2. बालिका विद्यालयों के लिए अनुदान की श आसान की जाएँ।
3. इन विद्यालयों का निरीक्षण महिला निरीक्षक द्वारा हो
4. विधवा महिलाओं को शिक्षिका बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाये।

सैडलर कमीशन के सुझावो से ही 1916 ... दिल्ली में लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेज की स्थापना की गयी। यह भारत का सर्वप्रथम महिला मेडिकल कालेज था। इसी वर्ष महर्षि कर्वे ने पूना में महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की

सैडलर कमीशन (1917)

सैडलर कमीशन ने सिफारिश की कि एक ऐसी परिषद् बनाई जाये जो महिलाओं के लिए पृथक उपयोगी पाठ्यक्रम तैयार करे। उस समय अनेक ऐसी संस्थाएँ भी थी जो देशी ढंग की शिक्षा दे रही थीं। किसी विद्यालय के अन्य स्थानों पर इ... परीक्षा केन्द्र होते थे। परीक्षा उत्तीर्ण करने वालों को ये संस्थाएँ उपाधि प्रदान करती थी। इनमें प्रमुख संस्थाए– हिन्दी साहित्य सम्मेलन, कन्या गुरुकुल,

प्रयाग महिला विद्यापीठ आदि थी जो लोगो को सुशिक्षित, सुसंस्कारित व अच्छी नागरिक बनाने में सहयोग दे रही थी। सन् 1922 से 1947 मध्य स्त्री शिक्षा का काफी विकास हुआ है। इस दौरान स्वाधीनता संग्राम की बागडोर मुख्य रूप से महात्मा गांधी के हाथ में रही। महात्मा गांधी व सम्भवतः सबसे बड़ी उपलब्धि यही थी

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49)

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में गठित आयोग ने स्त्री शिक्षा के महत्व और आवश्यकता पर पर्याप्त बल दिया। जो आयोग ने सुझाव दिये वे निम्नलिखित हैं–

1. स्त्रियों को उनकी आवश्यकतानुरूप शिक्षा दी जाए।
2. शैक्षिक अवसरों की समानता प्रदान की जाए।
3. स्त्रियों को गृह अर्थशास्त्र गृह प्रबन्धन आदि की शिक्षा दी जाए।
4. जो विद्यालय सह–शिक्षा के रूप में संचालित हैं उनको वास्तव में सहशिक्षा के रूप में संचालित किया जाए। सत्यता यह है कि उनमें सारी सुख–सुविधाएँ पुरुषो के लिए है बालिकाओं के खेलकूद, आमोद–प्रमोद व आवश्यक सुविधाएँ भी उपलब्ध नही हैं बहुत से विद्यालय ऐसे जहाँ कोई भी स्त्री शिक्षिका है ही नहीं अतः यह आवश्यक हो गया है कि सही अर्थों में सह शिक्षा विद्यालय विकसित किये जाएँ।

राष्ट्रीय महिला समिति (1958)

राधा कृष्णन कमीशन का कार्यक्षेत्र विश्वविद्यालय तक ही सीमित रहा और उस पर अमल भी बहुत कम हो पाया। अतः भारत सरकार ने द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान वर्ष 1958 में श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख की अध्यक्षता में राष्ट्रीय महिला शिक्षा समिति का गठन किया। इस समिति को देशमुख समिति भी कहा जाता है। इस स निम्नलिखित सुझाव 1959 में प्रस्तुत किया जो निम्नलिखित हैं–

1. केन्द्रीय स्तर पर राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद् का गठन किया जाय जो स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिए उत्तरदायी हो।
2. प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं को अधिक सुविधाएँ प्रदान की जाएँ
3. कुछ समय के लिए लड़कियों की शिक्षा को विशिष्ट समस्या के रूप में स्वीकार किया जाये।
4. ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिए प्रयास किये जाएँ।

कोठारी कमीशन

कोठारी कमीशन ने सामान्यतः देशमुख समिति, हंसा मेहता तथा भक्तवत्सलम समिति की सन्तुतियों का समर्थन करते हुए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये–

1. 6–14 वर्ष की सभी लड़के लड़कियों के लिए अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की जाये।
2. महिला शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता उदारता के साथ की जाये।
3. लड़कियों के लिए अलग से महाविद्यालय स्थापित किया जाये।
4. स्त्रियों के लिए अशंकालीन रोजगारों की विशेष व्यवस्था हो ताकि वे पारिवारिक दायित्वों को सँम्भालते हुए अपनी शिक्षा का आर्थिक लाभ उठा सके।

स्त्री शिक्षा की समस्याएँ

स्त्रियों की शिक्षा की प्रगति व विकास न पाने की अनेक समस्याएँ हैं-

1. सहशिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण सहशिक्षा का आशय बालक–बालिकाओं को एक ही स्कूल में समान पाठ्यक्रम से होता है।

प्राथमिक स्तर पर दोनों साथ–साथ पढ़ते हैं पर माध्यमिक व उच्च स्तर पर दोनों साथ–सा पढ़ाने के सम्बन्ध में लोग एकमत नही .. अधिकतर भारतवासी इसके विरोध में हैं जिसका मुख्य कारण लड़के–लड़कियों में यौन सम्बन्धों और प्रेम विवाह का भय है। कुछ लोगो का तर्क है कि पुरुष–युवतियों को एक संस्था में ए साथ पढ़ाने से उनको ज्यादा समय सज.. संवरने आदि में गुजर जाता है। इस समस्.. का हल हमें रूढ़ियों को समाप्त करके ही किया जा सकता है। इसका एक प्रमुख उपाय महिला अध्यापिकाओ को अत्यधिक संख्या में नियुक्त करके किया जा सकता है

2. **शिक्षिकाओं की मानसिकता की समस्या**– हमारे देश में प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की कमी रही है। लाखों प्रशिक्षित शिक्षिकाएँ बेरोजगार हैं परन्तु ये अपने निवास स्थानों से दूर, विशेषकर ग्रामीण, पहाड़ी, रेगिस्तानी और दूरदराज के क्षेत्रों - जाना पसन्द नहीं करती। यदि प्रथम नियुक्त स्वीकार कर भी लेती हैं तो कुछ ही दिनों -. भाग–दौड करके सिफारिश अथवा पैसे के बल से अपना स्थानान्तरण करा लेती हैं परिणा-. स्वरुप ग्रामीण विद्यालयों में महिला शिक्षिकाएँ हैं ही नहीं

जिसके समाधान के लिए दूरदराज, पहा ग्रामीण आदि क्षेत्रो में महिला सुरक्षा का उ प्रबन्ध किया जाना चाहिए। यदि पति- ... अलग–अलग स्थानों पर हैं तो एक स्थान पर तैनाती दी जानी चाहिए

स्त्री शिक्षा की समस्याएँ

शिक्षा जगत् की एक प्रमुख समस्या अपव्यय व अवरोधन की सम.्या है जिसके प्रमुख कारण विद्यालयों की अनुपलब्धता विद्यालयों की दुर्दश निर्धनता व कुछ सामाजिक कारण हैं– इ... समाधान विद्यालयों की दशा सुधारकर शिक्षकों की जवाबदेही तय करके विकलांगों के लिए विशि विद्यालयों की स्थापना की जाएँ। उनकी सुविधा. बढ़ाई जाएँ कस्तूरबा विद्यालयों की दशा में सुधा किया जाय।

इन सभी निष्कर्षों व तथ्यों के आधार पर यदि बात नारी शिक्षा की की जाय तो यह बात पूर्ण सत्य है कि हम विश्व या समाज का विकास तब त नही कर सकते हैं जब तक हम विश्व की अ.. जनसंख्याओं को पूर्णतः शिक्षित नहीं कर देते हैं अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष, 1975 के समाज महिलाओं की वास्तविक भूमिका के परीक्षण लिए अनेक विकासशील देशो में एक उत्प्रेरक व.. कार्य किया जब महिलाओं की शिक्षा व प्रशिक्षण में धन लगाया जायेगा तो ऊँचा प्रतिफल प्राप्त होगा। महिला शिक्षा की दशा को सुधार करके उनके खिलाफ अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न, निर्धनता व अन्य बहुत प्रकार की समस्याओं से उनको बचाया जा सकता है व महिलाओ की समानता के साथ–साथ आत्म–निर्भरता भी प्रदान की जा सकती है तथा सम्पू समाज की दिशा व दशा के एक उत्कृष्ट मार्ग क.. चयन किया जा सकता है जहाँ समृद्धि, खुशहाली, भाईचारा, प्रेम मातृत्व आदि का अहम स्थान होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

लाल, रमन बिहारी–भारतीय शिक्षा का इतिहार विकास एवं समस्याए

नारी शिक्षा हरीचन्द (नई शिक्षा पद्धति वर्ष 8, अंक 5 TSSN No.- 2393–8153ए अग्र पब्लिकेशन आगरा उ.प.0

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2018, Vol. (2) No. 1 & 2 : 42-45
©Apollo Journal of Educational Research

आधुनिक शिक्षा में नवाचार तकनीक

श्रीमती अर्पणा राजपूत

सारांश

नवाचार 13वीं पंचवर्षीय योजना (2016–20) में अक्सर उल्लेख मिलता है। नवाचार जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों में विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र में भी एक उत्साह बन गया है। और शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार का मतलब शिक्षा में नवाचार नहीं बल्कि शिक्षा के माध्यम से सामाजिक नवाचार को भी बढ़ावा देता है। आधुनिक समाज ने वाचार प्रौद्योगिकी, मानव गतिविधि के लगभग हर क्षेत्र में फैली हुई है, जिसमें शिक्षा जैसे व्यापक क्षेत्र शामिल है। शैक्षणिक प्रक्रिया अभ्यास में नवीनता प्रौद्योगिकियों को एकीकृत करने के कारण, इस घटना ने स्थापित शैक्षणिक व्यवस्था के सुधार और आधुनिकीकरण के भीतर विशेष महत्व प्राप्त प्राप्त किया। वर्तमान में सक्रिय एकीकरण और शिक्षा में नवाचार प्रौद्योगिकियों के व्यापक आवेदन की समस्या बहुत महत्वपूर्ण है। वर्तमान अध्ययन आधुनिक शिक्षा में सीखने की नवीनता प्रौद्योगिकियों की पड़ताल करता है। इस ग्रुप का उद्देशय समावेशी, सहभागिता पूर्ण और समग्र दृष्टिकोण से देश के लिए एक नई शिक्षा नीति तैयार करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में बनाई गई थी और 1992 में संशोधित की गई थी। तब से अब तक अनेक बदलाव हुए है, जिसकी वजह से संशोधन संबंधी आवश्यकताओं के परिवर्तनशील पहलुओं से निपटने के लिए नई शिक्षा नीति लाना चाहती है जिसका उद्देश्य भारत को, इसके छात्रों को आवश्यक कौशल तथा ज्ञान प्रदान करके ज्ञान के क्षेत्र में महाशक्ति बनाना तथा विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा एवं उद्योग जगत में श्रमशक्ति की कमी को दूर करना होगा।

आधुनिक शिक्षा में नवाचार

परिचय : "नवाचार कोई नया कार्य करना ही मात्र नहीं है वरन् किसी भी कार्य को नये तरीके से करना भी नवाचार है।" आज कक्षा में प्रत्येक छात्र तक पहुँचने के लिए पाठ्यक्रम के समान दृष्टिकोण का उपयोग करना अक्सर मुश्किल होता है। आधुनिक दुनिया में परिवर्तन और नवाचार की गति को देखते हुए यह आवश्यक है कि विद्यालय एक कम रुढ़िवादी भूमिका लेते है। तथा कक्षा और पाठ्यक्रम में नवाचार को शामिल करते है

शैक्षिक सुधार और प्रौद्योगिकी : कक्षा में तेजी से अभिनव शिक्षण और सीखना उच्च छात्र उपलब्धि के लिए एक वाहन के रूप में देखा जाता है, अधिक प्रासंगिक सीखने और भविष्य में काम करने ए रहने के लिए जरूरी कौशल के विकास आवश्यव है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि अधिक... भाग के लिए शिक्षा का वर्तमान मॉडल 19वीं शताब्दी के मॉडल पर आधारित है। परिणाम स्वरूप प्रयोग और नए तरीकों की ओर बढ़ना शिक्षा के पूरे मॉडल में बदलाव की संभावना है। सभी दिशाओं से ब इस क्रांति को प्रभावित कर रहे है जैसे शिक्ष छात्र, प्रशासन, व्यवसाय और सरकारी

शिक्षा वर्तमान मॉडल एक कठोर नौकरशा प्रणाली है जिसे औद्योगिक क्रांति की जरूरतों क पूरा करने के लिए बनाया गया था। नेटवर्क संचार प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर स्कूल, घर और काम के

सहायक प्राध्यापक, संस्कार सिटी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, राजनांदगाँव

बीच इन कनेक्शनों का समर्थन करते है। डिजिटल प्रौद्योगिकी और संचार के क्षेत्र में तेजी से प्रगी और संशोधनों के कारण शैक्षिक सुधार के ... भविष्य में भविष्यवाणी की एक तकनीकी परिप्रेक्ष्य जटिल है। निश्चित रूप से भविष्य में उप... उन्नत उपकरणों की एक विस्तृत श्रृखंला होगी जिसमें शिक्षा का समर्थन करने आगे बढ़ाने एवं संसाधनों से जुड़ना होगा

शिक्षक प्रशिक्षण : शिक्षको का ऊपर बनाई गई विभिन्न तकनीकों का उपयोग करने की आवश्यकता होगा और छात्र परियोजनाओं को डिजाइन संरचना, गाइड और मूल्यांकन कापे में सक्षम होगें। यह भी महत्वपूर्ण है कि शिक्षकों को प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। एवं ईमेल खातों, और उपकरण जैसे चार्जे उनके मूल्यांक तथा उपयोग के लिए प्रदान की जाती है। विद्यालय स्तर पर उपलब्धता एवं लागत के आधार पर प्रत्ये विद्यालय के पास एक सर्वर सबसे तेज इंटर .- कनेक्शन रखने के लिए विवेकपूर्ण होता है इस पर जोर देना चाहिए कि उपरोक्त भविष्यवाणीयों औ सिफारिशें केवल उसी के लिए दिशानिर्देश है वर्तमान समय का मामला लगता है

कक्षा में नवाचार तकनीकी : 21वीं शताब्दी तक पहुँचने वाले कई चुनौतियों में शिक्षकों .. सामना करना पड़ता था शिक्षण को समाप्त करने के लिए प्रभावी ढंग से और रचनात्मक रूप आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल कैसे किया जाए कम्प्यूट प्रौद्योगिकी के रूप में हम जानते है कि संभव.. शिक्षकों के लिए उपलब्ध सबसे शक्तिशाली उपकरण है। स्कूल के पाठ्यक्रमों में शुरु की गई र.. आधारित कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी कार्यक्रमों के लि स्कूल, स्कूल बोर्डो, सरकारों साथ ही व्यवसायों ने एक उच्य प्राथमिकता विकसित की है। कक्षा कमरे में कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी के सफल एकीकरण की आवश्यकता है कि शिक्षको विद्यालय प्रशास आदि को प्रारंभिक अध्ययन और विश्लेषण करन चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जासके कि जो लोग लागू कर रहे है, वे शिक्षार्थि... आवश्यकताओं को पूरा करते है। वे सुझाव देते कि कई मुद्दों पर उत्पादक आत्मसात करने .. क्रम में इस तरह से संबोधित किया जाना चाहिए :

- सभी छात्रों को व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम की जरूरत है।
- शिक्षार्थी योग्यता।
- तकनीक के प्रति शिक्षार्थियों का रवैया।
- आपकी कक्षा में शिक्षार्थियों की तकनी समझ।
- व्यक्तिगत शिक्षण और सहयोगी कौशल

कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी द्वारा प्रदान की जाने वाली संभावनाएँ या लाभ कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी में सीखने और शिक्षण को बढ़ाने के लिए कई संभावनाएँ . जिसमें शिक्षार्थी की प्रेरणा बढ़ने "प्रमाणिक जानकारी के लिए व्यापक और आसान पहुँच सीखने की बढ़ी हुई व्यक्तिगत जानकारी, सीखने में अधिक सक्रिय भागीदारी अन्य शिक्षार्थियों के साथ सहयोग बढ़. संचार सीखने के बढ़ते उपयोग इनमें से कई मुद्दो का समर्थन करता है और अपने शीर्ष दस कारण को स्पष्ट करने के लिए आगे बढ़ता है कि ट तकनीक स्कूल के पाठ्यक्रम का एक महत्वपू घटक है।" प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लि शीर्ष दस कारण है

(i) छात्र अलग दरों में सीख सकते है

(ii) स्नातक तक पहुँचने मूल्यांकन करने औ. सूचनाओं को संप्रेषित करने में कुशल होना चाहिए।

(iii) तकनीक सोच एवं लेखन छात्रों की मात्र और गुणवत्ता में वृद्धि को बढ़ावा दे सकती "रचनात्मकता"।

(iv) जटिल समस्याओं का हल करता है : "ब्लूम कौस्टैनीमिया के उच्चस्तर"।

(v) प्रौद्योगिकी, कलात्मक, अभिव्यक्त का पोषण कर सकती है

(vi) स्नातको का विश्व स्तर पर अवगत होन चाहिए एवं उन संसाधनों का उपयोग कर.. .. सक्षम होना चाहिए जो स्कूल से बाहर निकलते है।

(vii) प्रौद्योगिकी छात्रों को उच्च स्तरीय और उच्च – रुचि वाले पाठ्यक्रमों तक पहँच की आवश्यकता होती है

(viii) प्रौद्योगिकी छात्रों को सार्थक काम करने के लिए अवसर बनाता है

(ix) छात्रों को सूचना युग के उपकरण के साथ सहज महसूस करना चाहिए

(x) स्कूलों को उनकी उत्पादकता एवं दक्षता में वृद्धि करना चाहिए

नवाचार में कम्प्यूटर के उपयोग से नुकसान : नवाचार में नई तकनीकी में कम्प्यूटर का सकारात्मक प्रभाव के बावजूद, शिक्षण एवं शिक्षा पर कम्प्यूटर तकनीकी के प्रभाव के बारे में कई चिंताए है। इससे डर है कि आवश्यक पढ़ना, लेखन, अनुस महत्वपूर्ण सोच कौशल को प्रभावी ढंग से .. सिखाया जायेगा क्योंकि वे तकनीक के उपयोग के माध्यम से होनी चाहिए एवं छात्रों को अनुभवों व.. बिना समझौता करना पड़ता है। वे यह भी दृढ़ता से मानते है कि कम्प्यूटर पर खर्च दिये गये पैसे बेहतर विद्यालय के अन्य क्षेत्रों में इस्तेमाल किये जा सकते है। ऐसे मँहगे उपकरण की खरीद के लिए उन पास एक कठिन समस्या है

परियोजना आधारित शिक्षण के लिए तकनीकी सहायता : पाठ्यक्रम में बहुत सारे नवाचार चल रहे है एवं इसके डिजाइन में परिवर्तन एवं निकट भविष्य के कक्षाओं में यह कैसे पढ़ाया जाएगा। यह परिवर्तन एक बदलती विश्व अर्थव्यवस्था की माँगो .. प्रौद्योगिकी जानकारी के तेजी से प्रसार के उत्तर में है ? लोगों को सीखने के तरीकों पर शोध प्रतिबिंबित करने के लिए शिक्षकों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस शोध एवं प्रतिबिंब के माध्यम से .. शैक्षणिक अनुसंधान और अध्ययन पर नए तरीकों को विकसित किया जा रही है। शोध से पता चलता है कि जब छात्र सीखने के कुछ स्वामित्व महसू करते है तो छात्र अधिक सीखते है। हमें अि छात्र – केन्द्रित दृष्टिकोण की अनुमति देने आवश्यकता है छात्रों को अपने ज्ञानका निम करने की आवश्यकता है

नवाचार में बाधा : कुछ ऑनलाइन शिक्षा को साफ लाइन में एक विघटनकारी प्रक्रिया के रू.. देखते है। विघटनकारी नवाचार का अर्थ है कि एक सस्ती विकल्प प्रदान करने के लिए शिक्षा का खर्च एवं अभिजात वर्ग बदल रहा है

शिक्षण विधियों में नवाचार

कक्षा में रोबोट : दक्षिण कोरियाई स्कूलों व रोबोट शिक्षकों के साथ प्रयोग किया है। यह पाठ बच्चों के लिए अधिक रोचक और मनोरंजक बनाता है एवं कक्षा में कक्षा में कहीं से भी शिक्षकों उपस्थित होने के लिए सक्षम बनाता है

मोबाइल टेक्नोलॉजी : स्मार्टफोन और अन्य मोबाइल उपकरणों का तेजी से शिक्षा में उपयो किया जाता है। मोबाइल एप्लिकेशन शिक्षक व. डिजिटल चुनाव आयोजित करते है, मौखिक औ प्रस्तुति कौशल को बढ़ाते है और प्रमुख योग्यत

सबक के साथ तकनीकी कौशल को शामिल करते है।

3 डी लर्निंग : बच्चों को 3 डी गेम और मूवीज का आनंद मिलता है, इसलिए उन्हें सीखने में मदद करने के लिए इस तकनीक का उपयोग क्यों करें ? जी.एस.ए.एस. मॉडर्न अकादमी दुबई छात्रे का 3 डी लैब के साथ इंटरेक्टिव मल्टीमी प्रजेंटेशन प्रदान करता है

विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की सहायता : सीखने में विकलांग लोगों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। उदाहरण के लिए ध्वनयात्मक वर्तन सॉफ्टवेयर शब्दों को वर्तनी में बदलने के .. समस्याओं को पढ़ने के साथ डिस्लेक्सिक छ और अन्य लोगों को मदद करता है

निष्कर्ष : परिवर्तन अच्छा है या बुरा इस संबंध में शिक्षापिद् किल पैट्रिक कर स्पष्ट अवधारणा कि—"परिवर्तन विचाराधीन बात का पूर्ण या आंशिक परिवर्तन है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि परिवर्तन अच्छी बात के लिए है या बुरी बात के लिए।" संक्षेप में कहा जा सकता है कि नवाचार शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से बच्चों का सर्वांगीण विकास तो होगा ही साथ उनका सतत एवं व्यापक मूल्यांकन भी हो सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

भाई योगेन्द्रजीत – नवाचार में नई शिक्षा पद्धति

ब्लूम बी. एस. (1956). टैक्सानौमी एजुकेशनल ऑबजेकटिव्स हैडबुक

चेसरे लिसा ओपन कॉलेज

नीता एम – पी. पी 6612–6617/अनुछेद संख्या ijese. 2016.550

इनसाक्लिोपिड़िया ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलौजी – जे. माइकल स्पेक्टर।

संदर्भ ग्रंथ सूची

कुल श्रेष्ठ – शैक्षिक तकनीकि के मूल आधार (आगरा पब्लिकेशन)

ग्वालियर लाईम – 11 जून 2008।

सलेम – रोल ऑफ आई. सी. टी. एज ए क्वालिटी टिचिंगटूल।

फरहनी – ई. लर्निंग ए न्यू पैराडिज्म इन एजुकेशन

राव – वी. के – एडुकेशन टेक्नोलॉली, नई दिल्ली

अनिल वर्मा – इन्फॉर्मेशन एवं कम्युनिकेशन

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2018, Vol. (2) No. 1 & 2 : 46-47
©Apollo Journal of Educational Research

उच्च शिक्षा में सचना प्रौद्योगिकी क भमिका

अरुण कुमार

सारांश

वर्तमान युग को सूचना और तकनीक का युग कहा जाए तो कोई गलत नहीं होगा। जैसे–विज्ञान के क्षेत्र में नवीन अविष्कार हो रहे है वैसे – सूचना और संचार, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी व्यापक बदलाव देखने को मिल रहा है। सूचना व संचार प्रौद्योगिकी के विकास के फलस्वरूप आज मानव जीवन का प्रत्येक क्षेत्र में यांत्रिका वस्तुओं का प्रयोग व्यापक रूप से होने लगा है। आज घर से लेकर कॉलेज तक इसके प्रभाव पड़ा है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक रूप से प्रभावित किया है। शिक्षण कार्यों में कम्प्यूटर, इन्टरनेट, फोन, ग्रामोफोन, मोबाइल, टी. वी. सैटेलाइट प्रौजेक्ट्र, वेब, सोशल मिडिया आदि उपकरणों का उपयोग धड़ल्ले से हो रहा है। इसके बिना शिक्षा व्यवस्था अपंग प्रतीत होता है।

परिचय :

आज के वैज्ञानिक युग में सूचना, संचार – प्रौद्योगिक का क्षेत्र अत्यन्त व्यापकता का रूप धारण कर चुका है। इन सूचना संचार व प्रौद्योगिक बदौलत घर बैठे या देश – विदेश के शिक्षकों . पढ़ना संभव हो पाया है साथ ही अपनी क्षैत्रणिक समस्या का समाधान भी इन्हीं के माध्यम से हो पा रहा है। इसके बदौलत आज उच्च शिक्षा के क्षत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। सूचना प्रौद्योगिकी के वजह से आज ज्ञान के नये द्वार खुले है। शिक्षा का भी वैश्वीकरण हो चुका है। भारत के विद्यार्थी आई. सी.टी. के उपयोग के माध्यम से देश व विदेश व बेहतर प्राध्यापक व कॉलेजो से शिक्षा ग्रहण व रहा है। सूचना का संप्रेषण, ज्ञान का संप्रे.., निर्माण, प्रदर्शन आदि का अदान–प्रदान इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों जैसे ईमेल, फैक्स, विडियों कॉफ्रेसिं- सैटेलाइट के माध्यम से रेडिया या टी.वी. आदि होने लगी है

सूचना संचार और प्रौद्योगिकी के विकास मानव जीवन को सरल तथा सुविधा पूर्ण दिया। इसके बदौलत हम घर बैठे उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गुणवतापूर्व एवं प्रभावशील शिक्षा प्राप्त कर सकते है। इनके अनुप्रयोग दूरिया घटी है। आज भारत के विद्यार्थी भारत में ही रह कर विदेश के विश्व विद्यालय से डिग्री प्राप्त कर सकता है। ये सब सूचना संचार व प्रौद्योगिकी के विकास से ही संभव हो पाया है, तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण के अधिगम की प्रक्रिया प्रभाव पूर्ण व दक्षता पूर्ण हो सकी है

शैक्षिक प्रौद्योगिका एक ऐसी प्रौद्योगिकी है जो निर्देशन सामग्री के स्वरूप को निधारित करती है, तथा अधिकतम लाभ के लिए अधिगम अन्तक्रियाओं को संरचना करती है। अधिगम को सरल बनाने व व्यवस्थित करने तथा शोध के ज्ञान को व्या... करने में शैक्षणिक प्रौद्योगिकी का सराहनीय भूमिका रहती है। आज विश्वविद्यालयों व कॉलेजो में शिक्षण कार्य से लेकर नामांकन आदि कार्यों में इर प्रयोग हो रहा है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में ... परम्परागत शिक्षा पद्धति गुरु–शिष्य परम्परा क. स्थान नवीन शिक्षा पद्धतियों ने ले लिया है। इसके बदौलत आज शिक्षक, छात्र, पाठ्यक्रम, शोधकर्ता

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, सरिया कॉलेज सरिया, गिरिडीह, (झारखण्ड)

आदि सभी प्रभावित हुआ है। शिक्षा अब स्कू कॉलेज, विश्व विद्यालयों के चार दीवारों से दू अपनी सुविधा अनुसार इन प्रौद्योगिकी का उपयोग कर सकते है

उच्च शिक्षा में सूचना, संचार व प्रौद्योगिकी के प्रयोग का महत्व

1. यह सेवा तंत्र का आधार स्तम्भ है

2. अविकसित राष्ट्रों के आर्थिक–सामाजिक के लिए उपयुक्त तकनीक है।

3. इससे सूचना का संप्रेषण व सूचना सम्पन्नता से सशसक्तीकरण होता है

4. सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग से शिक्षा के क्षेत्र में पारदर्शिता आती है।

5. शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त भष्ट्राचार पर लगाम लगता है।

6. इसके प्रयोग से रोजगार के नये पद सृजित होते है।

7. नीति निर्धारण, योजना के निर्माण, निर्णय लेने आदि में सूचना तकनीक सहायक सिद्ध होत है।

8. उच्च शिक्षा के शोध के कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है

उच्च शिक्षा में सूचना, संचार व प्रौद्योगिकी के प्रयोग से लाभ

1. सूचना, संचार व प्रौद्योगिकी के बदौ दूरस्थ शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है

2. उस शिक्षण संस्थाओं में इसके प्रयोग पारदर्शिता लाई जा सकती है

3. सैटेलाईट, इन्टरनेट, टी.वी., वेब, रेडियं., कम्प्यूटर आदि के माध्यम से पाठ्यक्रम के वितरण के साथ–साथ खुली शिक्षा कारगर साबित हुआ है।

4. इसके बदौलत नामांकन से लेकर परीक्ष.. परिणाम आने तक आदि का प्रयोग शिक्षण क्षेत्र में किया जाता है। जो विद्यार्थियों के लिए सुविधाजनक होता है

5. इससे समय व धन का बचत होता है

6. इसके प्रयोग से शिक्षण की गुणवता में वृद्धि होती है

7. अधिगम अधिक रोचक व स्थाई होता है

8. इसके प्रयोग से शिक्षा का अर्न्तराष्ट्रीयकरण हुआ है। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भारत के विद्यार्थी दूसरे देश विशेषज्ञ शिक्षक से शिक्षाग्रह कर सकता है

9. अब कही भी और कभी शिक्षा प्राप्त करने में सहुलियत हो रही है

इस प्रकार हम कह सकते है कि आज के दौर में सूचना, संचार व प्रौद्योगिकी के प्रयोग से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अमूल – चूल बदलाव हुआ है। अब इसके सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिल रहे है। शिक्षण व अधिगम के क्षेत्र को भी पूरी तरह से प्रभावित किया है।

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2018, Vol. (2) No. 1 & 2 : 48-50
© Apollo Journal of Educational Research

वर्तमान परिदृश्य में अध्यापक शिक्षा के मुद्दे एवं चनौतियाँ

डॉ. मनीषा तिवारी (पाण्डे)* एवं डॉ. विजय प्रकाश शर्मा**

सारांश

राष्ट्र की समग्र प्रगति में शिक्षक की भागीदारी सर्वादित है। समग्र शिक्षक राष्ट्रीय विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते है और अपने सम्पर्क में आने वाले विद्यार्थियों को जीवन में उच्चतम गुणों को प्राप्त करने की राह दिखाते हैं। शिक्षा की गुणवत्ता मूल्य का ह्रास आदि अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। ऐसे में अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता बनाये रखना राष्ट का कर्त्तव्य है। अध्यापक शिक्षा की परम्परागत शिक्षा में परिवर्तन एवं सुधार के प्रयास कर रहे है। परन्तु परम्पराओं को बनाये रखने की मानसिकता के कारण अध्यापक शिक्षा आज भी पुरानी विषय वस्तु सिद्धांत एवं परम्पराओं पर आधारित है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में विशेष मुद्दे एवं चुनौतियों को पूर्ण करने हेतु सोच, मन एवं व्यवहार में परिवर्तन करने होगें। अध्यापक वही है जो राष्ट्रभक्ति से परिपूर्ण है। शिक्षण समाज की धुरी है इसलिये शिक्षक ही ज्ञान का प्रसार कर सकता है। आज शिक्षक बनाये जाते है उन्हें प्रशिक्षण के द्वारा तैयार किया जाता है। शिक्षण का प्रस्तुतिकरण अच्छा हो इसके लिये प्रशिक्षण का उद्देश्य कौशल के विकास में होता है। दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र और मनोविज्ञान की पक्षों से संबंधित सभी विषयों का ज्ञान अध्यापक शिक्षक को होना जरूरी है। वर्तमान समय में हमारी प्रवृत्ति अध्यापक प्रशिक्षण को छोड़ अध्यापक शिक्षा की ओर बड़ी है जिसके फलस्वरूप प्रशिक्षण संस्थाओं में हम शिक्षकों को शिक्षण का अधिक ज्ञान एवं कौशल देने से संतुष्ट नहीं है। आज हमारे अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आधुनिक जरूरतों को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। आवश्यक जानकारी एवं कौशल प्राप्त करने के अतिरिक्त शिक्षक को यह जानना आवश्यक है कि वह किस सामाजिक परिप्रेक्ष्य में रह रहा है तथा जिसके लिये उसे भावी पीड़ियों को तैयार करना है।

प्रस्तावना :

जॉन एडम्स ने कहा कि "अध्यापक ही व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं विश्व का निर्माणक एवं विकास का प्रमुख आधार है। बिना शिक्षक की सार्थक सहभागिता के किसी राष्ट्र का वर्तमान एवं भविष्य का निर्माण एवं विकास सम्भव नहीं है।" इसी बात को भारतीय मनीषियों ने, "गुरुः ब्रह्मा, गुरुः विष्णु, गुरुः देवो महेश्वरः" के रूप में कहा। यह परम्परा एवं अध्यापक के प्रति सम्मान सनातन से चल आ रहा है, किन्तु जब अध्यापक की दशा एवं दिशा को वर्तमान परिप्रेक्ष में देखने का प्रयास करता हूँ त उसका स्वरूप परिवर्तित दिखायी पड़ता है, जिसमें विगत दशक समाज के लिए बहुत ही असन्तोषजनक रहा उसमें 'अध्यापक शिक्षा' के गुणवत्ता पर एक प्रकार से प्रश्न चिन्ह अथवा चुनौती के रू दिखायी पड़ता है।

समाज में अध्यापक शिक्षा के मुद्दे

(1) अध्यापक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य समाजीकरण की प्रक्रिया पूरा करना है—शिक्षक जिम्मेदार नागरिक, चरित्रवान नेता, ईमान अधिकारी व कर्मचारी बनाती है। शिक्षा देशभक्त बनाती है एवं वतन पर मिटने का जज्बा पैदा करती है।

* सोनाली स्कूल के पास, दूबे कॉलोनी, गुना (म. प्र.)

(2) अध्यापक शिक्षा विरासत को हस्तान्तरित करने वाली हो—अध्यापक शिक्षा ऐसी हो जो कौशल, कला, साहित्य, दर्शन, धर्म, संगीत और विश्वास को बढ़ाये इसके लिए और गम्भीर प्रयास कर चाहिए।

(3) अध्यापक शिक्षा से समाज में सुधार हो व मनुष्य शिष्ट बने—शिक्षा मनुष्य को शिष्ट बनाने वाली हो, व्यवहारिक विश्वासप्रद व वफादारी गुणों को जागृत करे। घृणा, पूर्वाग्रहों को अवशोषित करें।

(4) अध्यापक शिक्षा सिर्फ आजीविका कमाने का साधन न हो—शिक्षा रोजगारोन्मुखी हो किन्तु केवल आर्थिक मानव या यांत्रिक मानव उत्पन्न न करें। शिक्षा जीवन का लक्ष्य होना चाहिए

(5) अध्यापक शिक्षा व समाज में संबंध के मार्ग की चुनौतिया—अर्थव्यवस्था के विकास के लिए कौशल की शिक्षा आवश्यक है

बट्रेड रसल के अनुसार "शिक्षा का कार्य केवल तथ्य संग्रह करना नहीं है बल्कि यह एक प्रक्रिया है जिसमें मानव समाज अपना अस्ति तलाशता है।" भारत में शिक्षा व समाज के अर्न्तसंबंध के मार्ग की मुख्य चुनौतियाँ है–

- शिक्षा के व्यवसायीकरण को रोकना
- शिक्षा के सम्मान को पुनजीर्वित करना
- शैक्षणिक सुधार हेतु आर्थिक संसाधन जुटाना।
- शिक्षण संस्थाओं को नौकरशाहों व राजनेताओं के नियंत्रण व हस्तक्षेप से मुक्ति दिलाना
- मूल्य आधारित शिक्षा को पुनर्जीवित करना
- सामाजिक लक्ष्यों और बदलाव लाना – शिक्षण सामग्री, शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण की विधि में बदलाव लाना
- शोध व ज्ञान आधारित शिक्षा का विस्तार करना।
- शिक्षण की भाषा की समस्या
- देश प्रेम की भावना को जाग्रत करना

अध्यापक शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने के सुझाव

समाज में शिक्षण संस्थाओं के लिये सहयोग – भारत में शिक्षा के निम्न स्तर का कारण धन व कमी है, इसलिए शिक्षा के उन्यन हेतु आ संसाधन जुटाने हेतु उद्यमियों, उद्योगपति व्यापारियों व व्यापक रूप से समाज को इ जोड़ा जाना चाहिए। जनभागीदारी के माध्यम बिना निजीकरण किये शासकीय शिक्षण संस्थाओं को नवजीवन मिल सकता है

शिक्षकों को वेतन देना फिजूलखर्ची है। गलत मानसिकता से उभरने की आवश्यकता है, सर्वप्रथम पूर्णकालिक शिक्षकों की नियुक्ति आवश्यक है।

शिक्षा का तकनीकीकरण का होना—वैश्वीकरण के इस दौर में शिक्षा को और अधिक उपय बनाने हेतु इसका तकनीकीकरण करना आवश्यक है। अंतरिक्ष, अन्वेषण व संचार, मास मीडिया के साथ जोड़ना होगा

- सामाजिक लक्ष्यों, उददेश्यों और मूल्यों में बदलाव लाया जाए।
- सम्पूर्ण भारत में पाठ्यक्रम में एकतरूपता लाई जाए।
- शिक्षकों को निरनतर प्रशिक्षित किया जाए।
- शिक्षिका एक आम संचार (भाषा) माध्य करना।
- शिक्षा में जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद समाप्त कर राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने वाली शिक्षा दी जाए।
- शिक्षा का व्यवसायीकरण रोका जाये, इस हेतु कानून बनाया जाये।

शोध आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना त... सामाजिक बदलाव व विकास को गति मिल सके

शिक्षा का आधुनिकीकरण कियाजाए। इस हेतु संस्थागत बदलाव किया जाए, शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण विश्वविद्यालय व संसाधनों में बदलाव किया जाए।

निष्कर्ष

अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता सुधार, महाविद्यालीय शिक्षा में सशक्त बनाने के ि... शिक्षकों की महती भूमिका को स्वीकार करना चाहिए। शिक्षा को उद्योग न समझ कर राष्ट्रीय विकास का आधार मानना होगा ताकि शिक्षा के दूरगामी परिणामों को स्पष्ट रूप से राष्ट्रहित में देखा जा सके। इस प्रकार नवीन शैक्षणिक गुणवत्ता सुधारों को सुगठित व व्यवस्थित तरीके से नियंत्रित करने की आवश्यकता है। भारतीय अध्यापक शिक्षा प्रणाली इतनी सा... खामियों से ग्रस्त है लेकिन बावजूद भारत में अध्यापक शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के प्रभावी उपकरण व से एक है। शिक्षा के क्षेत्र में नेतृत्व की आवश्यकता है जो समाज के शैक्षणिक, मूल्यभूत चुनौतियों को पहचान कर नयी सोच व प्रणालियों के साथ देश में शैक्षिक ज्ञान का प्रकाश फैला सके

संदर्भ ग्रंथ सूची

पाण्डे, आर. एस. (1977). शिक्षा के मूल्य सिद्धांत आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर, पृ. 213–231।

मित्तल, एम. एल. (1999). शिक्षा सिद्धांत मेरठ : लायल बुक डिपो, पृष्ठ 288 से 300।

CHEA (2002). Council for Higher education Accreditation, Annual Conference and International seminar held in San Francisco, CA.

Federal Ministry of Education (2000). Education Today : Quarterly Journal of Federal Ministry of Education.

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2018, Vol. (2) No. 1 & 2 : 51-53
© Apollo Journal of Educational Research

अध्यापक शिक्षण संस्थाओं की वर्तमान स्थिति

श्रीमती नम्रता बलदेव

सारांश

अर्थात विद्या विनय देती है, विनय से पात्रता, योग्यता आती है। पात्रता के साथ–साथ धन भी प्राप्त होता है, तथा धन से धर्म व धर्म से सुख की प्राप्ति होती है। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में यह एक सटीक उदाहरण है। वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षा का उपयोग मात्र व्यवसायीकरण एवं धनार्जन के एक स्त्रोत के रूप में ही सीमित होकर रह गया है।

प्रस्तावना :

विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम।।

पात्रत्वात् धनमानोति, धनात् धर्म ततः सुखम॥

प्राचीन का से ही हमारी शिक्षण व्यवस्था - गुरु का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है। गुरु य. शिक्षक का योग्य होना, ज्ञान में परिपूर्ण होना एवं शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य के प्रति उ... प्रतिबद्धता, यही शिक्षक की सफलता की कसौट रही है। वर्तमान समय की माँग है कि एक सफल. शिक्षक उपरोक्त गुणों के अलावा तकनीकी रूप से भी दक्ष हो और यह महती कार्य एक उत्कृष्ट शिक्षक प्रशिक्षण संस्था द्वारा ही संभव है

परंपरागत धारणा यह थी कि अच्छे शिक्ष... जन्मजात होते हैं, परन्तु वर्तमान धारणा कि अच्छे शिक्षकों को प्रशिक्षण से तैयार किया जा सकता है और यही महत्वपूर्ण कार्य आज की अध्यापक शिक्षण संस्थाएं बखूबी कर रही है

वास्तव में शिक्षा एक बड़े से वर्तुल के समान है और शिक्षक, शिक्षक शिक्षण संस्थाएँ एवं स्कूल ये सब इसी बड़े वर्तुल की कड़ियाँ है। इन सब ... सामूहिक उत्कृष्टता ही शिक्षा की संपूर्ण गुणवत्ता में सुधार ला सकती है एवं समाज को बेहतर विद्यार्थी दे सकती है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि अध्या शिक्षण संस्थाएँ एक कारखाने के समान है ... प्रशिक्षु शिक्षक रूपी माल को बेहतर शिक्षक रूपी अंतिम उत्पाद में बदलती है।

माँग एवं आपूर्ति के सिद्धांत पर काम करते हुए अध्यापक शिक्षण संस्थाएँ रूपी ये कारखाने स्कूलों को अच्छे शिक्षक रूपी उत्पाद की आपूर्ति करते हैं। ये अध्यापक शिक्षक संस्थाएँ एक केन्द्रीय संस्था की निगरानी में कार्य करती है जिसे "राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षक परिषद" (N.C.T.E.) कहा जाता है। NCTE की स्थापना केन्द्र सरकार द्वारा एक अध्यादेश द्वारा संवैधानिक संस्था के रूप में 1993 में ... गई। इसका मुख्य कार्य राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा की प्रणालियों, प्राविधियों की गुणवत्ता को सुनिश्चि करना उनकी देखरेख करना एवं संबंधित सुझ... देना है। अध्यापक शिक्षण संस्थाओं को NCTE द्वारा निर्धारित मापदंडों के आधार पर कार्य करना होता है तथा NCTE स्वयं मुख्यतः दो आधारों पर कार्य संपादित करती है–

सहायक प्राध्यापिका (शिक्षा), श्रीराम शिक्षा महाविद्यालय, सोमनी, राजनांदगाँव (छ. ग.)

In service

Pre Service

In service के अंतर्गत पूर्व से कार्यरत शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार का कार्य कुछ कार्यक्रमों के द्वारा किया जाता है जैसे—नवीनतम | प्राविधियाँ, सिद्धांतों पर Orientation, Seminars, Workshops आदि समय-समय पर आयोजि किये जाते हैं।

Pre service के अंतर्गत शिक्षण के क्षेत्र -. पदार्पण के इच्छुक छात्रों को इसके योग्य बनाने का कार्य किया जाता है जैसे बी.एड., एम.एड., आदि के पाठ्यक्रम आदि।

शिक्षा के क्षेत्र में दो तरह की शक्तियाँ का करती है। एक ओर भावी शिक्षक ऐसे ... अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं की खोज में रहते हैं, जहाँ वे उचित प्रशिक्षण प्राप्त कर अच्छे शिक्षक के रूप में अपना कैरियर बना सके। वहीं दूसरी शक्ति होती है अभिभावकों की, जो अपने बच्चों को अच्छे स्कूलों में पढ़ाना चाहते हैं, जहाँ सर्वश्रेष्ठ शिक्षव. की निगरानी में उनके बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सके। शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में NCTE जैसी संस्थाएँ इन शक्तियों के बीच में संत बनाए रखने का चुनौतिपूर्ण कार्य करती है। NCTE का काम मुख्यतः 4 आधार स्तंभों पर टिका होता है—

1. Pillar of Physical Fealure of Teacher Education Institutions.
2. Pillar of Academic Assessment.
3. Pillar of Reforms.
4. Pillar of Accrediation and Ranking.

1. Pillar of Physical Fealure—अध्यापक शिक्षण संस्थाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए उपलब्ध सुविधाओं का भौतिक सत्यापन किया जाता है। निर्धारित मापदंडों के अनुसार संस्था क अपना भवन, लाइब्रेरी, भूमि एवं अन्य मूल... सुविधाओं की जाँच स्तरीय गुणवत्ता परीक्षकों द्वारा की जाती है।

2. Pillar of Academic Assessment—इस हेतु संस्थाओं को अपने Staff, Teaching programmes एवं Curiculum का NCTE के पास पंजीकरण कराना होता है जिसकी सहायता .. National Teacher Portal बनाया जाता है। इस आधार प संस्थाओं का समग्र रूप से गुणवत्ता आंक किया जाता है।

3. Pillar of Reforsm—इसके अंतर्गत संस्थाओं की Teaching Learning Process की गुणवत्ता जाँची जाती है। प्रशिक्षु अध्यापकों के वि... गतिविधियों का Video बनाया जाता है ताकि इस प्रक्रिया की गुणवत्ता का मूल्यांकन किया जा सके।

आवश्यकतानुसार इन Educational Videos को देश भर में प्रदर्शित किया जाता है और इन माध्यम से संस्थाओं क Performance Score मापा जाता है।

4. संस्थाओं का Accrediation एवं Ranking—ये संस्थाएँ अपने उद्देश्य में कितनी सफल है इसकी जाँच के लिए इनक. Learning outcome की गुणवत्ता का आकंलन किया जाता है और स... संस्थाओं का मूल्यांकन कर उन्हें राष्ट्रीय रैंकिंग की जाती है।

1. Ask Test अर्थात Attitude, Skill एवं Knowledge के तीन मापदंडों पर संस्थाओं परखा जाता है।

2. T.E.T. Teachers Eligbility Test या TET के माध्यम से प्रशिक्षु शिक्षकों का समग्र प्रशिक्षण

का ज्ञान जाँचा जाता है। इन Tests को राज्य एवं केन्द्र स्तर पर शिक्षक भर्ती परीक्षाओं के रूप मान्यता प्राप्त है।

वर्तमान में अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाएँ अपनी पूरी क्षमता से शिक्षकों को प्रशिक्षित करने का कार्य अविरत ढंग से कर रही है। इनके कार्यों में प्रमुः हैं—

- प्रत्येक संबंधित विषय यथा शिक्षा, दः मनोविज्ञान, भाषा प्रवीणता आदि विषय वा अध्ययन।
- विषयों का प्रायोगिक तौर पर छात्रों के मध प्रयोग करना।
- सीखी गई शिक्षण विधियों का उपयोग उनके प्रभाव का अध्ययन
- प्रशिक्षणार्थियों को स्कूल में शिक्षण कार्य करवाना इत्यादि।
- अवलकोन कार्य।
- आधुनिक तकनीकी पक्षों जैसे सेमं. विचारगोष्ठी, पावर पॉइंट प्रेजेन्टेंशन आदि प्रशिक्षण।

इन सब प्रशिक्षण का उद्देश्य होता है कि शिक्षण के क्षेत्र में पदार्पण करने के पूर्व ही प्रशिक्षु पारंगत व सभी संबंधित ज्ञान से पूर्णतः सज्ज हो सके व एक बेहतर शिक्षक बन कर समाज की सेवा कर सके।

अध्यापक शिक्षण संस्थाओं के समक्ष चुनौतियाँ

01. निर्धारित मापदंडों के अनुपाल व्यावहारिक समस्याओं से निपटना

02. उच्च गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षकों की कमी।

03. संस्थाओं द्वारा प्रशिक्षकों को दिये जा रहे वेतन/मानदेय में असमानताएँ

04. निर्धारित मापदंड विशेषकर Infrastructure संबंधी मापदंडों के अनुपालन में कठिनाईयाँ

05. ओरिएंटेशन, रिफ्रेशर कोर्स आदि की कमी।

06. प्रशिक्षार्थियों का इस ओर कम होता रुझान।

07. बढ़ती बेरोजगारी एवं स्थाई नियुक्तियों में कमी।

08. संस्थाओं के भविष्य के Vison में खामियाँ।

सुझाव

01. अध्यापक शिक्षण संस्थाओं के समक्ष मौजूदा चुनौतियों का निराकरण आवश्यक है। यह कठि नहीं है, आवश्यकता है तो बस उन पर ध्यान दे की।

02. कुछ नियम अत्यंत कठोर हैं यथा प्रशिक्षकों के लिए राष्ट्रीय स्तर की भर्ती परीक्षा पास करने की एवं प्रदीर्घ अनुभव की अनिवार्यता। यदि इन नियमों को कुछ शिथिल किया जाय व कार्य अनुभव दे. वरीयता दी जाए तो बेहतर परिणाम मिल सकते हैं।

03. प्रशिक्षकों को उचित मानेदय, वेतनवृद्धि सुनिश्चित की जाये जिनसे उनकी संतुष्टि हो गुणवत्ता में वृद्धि हो

04. समय-समय पर प्रशिक्षकों के ... आरियंटेशन व रिफ्रेशर कोर्स करवाएँ जाएँ ताकि वे नवीनतम शैक्षणिक प्रविधियों से परिचित हो सके

05. संभव हो तो शिक्षा हेतु एक ... विश्वविद्यालय की स्थापना की जाये ताकि शिक्ष क्षेत्र की समस्त गतिविधियाँ एक ही स्थान सुचारू ढंग से सम्पादित की जा सके

06. In Service प्राध्यापकों के लिए अनिवार्यतः विभिन्न शैक्षिक विषयों पर कार्यशालाएँ, गोष्ठियाँ, रिफ्रेशर कोर्स आदि आयोजित किये जाएँ।

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2018, Vol. (2) No. 1 & 2 : 54-57
© *Apollo Journal of Educational Research*

कौशल विकास एवं रोजगारोपरक शिक्षा

तृकेश कुमार वर्मा* एवं डॉ श्रीमती माधुरी गौतम**

सारांश

विभिन्न कलाओं दस्तकारी, कार्यानुभव, तकनीकी, नृत्यकला, चित्रकला एवं जीवन जीने की शैली अर्थात् इन सबका संबंध जीवन कौशल से है। भाषायी कौशल, लेखन कौशल, संप्रेषण कौशल, व्यावहारिक कौशल, निर्णय कौशल, हस्तकला कौशल और तकनीकी कौशल भी इस कौशल विकास के प्रमुख भाग है।

प्रस्तावना :

जहाँ तक कौशल विकास का संबंध है कौशल विकास व्यावहारिक एवं व्यावसायिक दोनों है। एक कौशल प्रतयक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कई छोटे–बड़े कौशलों से जुड़ा होता है और उन कौशलों पर अपना प्रभाव डालता है। जैसे भाषायी कौशल विकास के द्वारा न केवल विद्यार्थी अपने विचारों को अभिव्यकत कर पाता है बल्कि दूसरों के साथ मधुर संबंध बनाने, संप्रेषण करने में सक्षम हो जाता है। यदि इस कौशल में और अधिक निखार और निपुणता ला दी जाए तो यह व्यवसाय एवं व्यापार करने में अधिक सहायक होता है

अब हमारे सामने प्रश्न यह आता है कि व्यावसायिक कौशल विकास के माध्यम से बेरोजगारी की समस्या को हल किया जा सकता है ? किसी भी व्यक्ति की जीवन शैली काफी हद तक उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है। यदि व्यक्ति की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है तो वह गरीबी और उससे जुड़ी समस्याओं का सामना कर सकता है। परंतु उसके लिये उसके पास रोजगार होना चाहिए और ऐसी शिक्षा हो जो कि उसे रोजगार दिलाने में सहायक हो। शिक्षा के द्वारा व्यावसायिक कौशल विकास होना चाहिए ताकि विद्यार्थी आर्थिक रूप से निर्भर बन सके इस संबंध में डॉ. राधाकृष्णन ने कहा है कि विद्यार्थियों को जीविकोपार्जन में सहायता देना शिक्षा के अनेक कार्यों में से सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। महात्मा गाँधी में व्यावसायिक कौशल विकास पर बल देते हुए कहा कि सच्ची शिक्षा को बालक और बालिकाओं के लिये बेकारी के विरूद्ध एक प्रकार की सुरक्षा देनी चाहिए। उनके अनुसार शिक्षा का तात्कालिक उद्देश्य बालक के बड़े होने पर उसे जीविकोपार्जन के योग्य बनाना है। यदि हमारी शिक्षा यह कार्य नहीं कर पाती तो वह व्यर्थ है। यदि वह व्यक्ति की भोजन वस्त्र, और मकान की मूल आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं करती तो वह निरर्थक है। गाँधी जी ने आत्मनिर्भर बनाने वाली शिक्षा पर बल दिया।

बेरोजगारी एक ऐसी समस्या है जिसका समाना विकसित एवं विकासशील दोनों देशों को करना पड़ रहा है। भारत एक विकासशील राष्ट्र है जहाँ मानव संसाधन प्रचुर मात्रा में है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या लगभग एक अरब इक्कीस करोड़ है। यहाँ की सबसे बड़ी विशेषता है कि यहाँ अधिकतर काम मशीनों से नहीं किए जाने के बावजूद भी बड़ी मात्रा में बेरोजगारी है यहाँ काम करने वाले हाथों के साथ–साथ सोचने वाले दिमाग बहुत है परंतु उन सभी हाथों के लिये

1. सहायक प्राध्यापिका (शिक्षा), श्रीराम शिक्षा महाविद्यालय, राजनांदगाँव (छ. ग.)
2. सहायक ग्रंथपाल, पं. किशोरीलाल शुक्ल उद्यानिकी महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, राजनांदगाँव (छ. ग.)

न तो काम है और न ही उनकी सोच का सही दिशा में प्रयोग करने के उचित साधन (व्यवसाय) का उपाय है। यही कारण है कि निर्धनता और बेरोजगारी देश के सम्मुख दो प्रमुख गंभीर समस्याएं है। ये समस्याएँ न केवल लोगों के व्यक्तिगत विकास में बाधक है अपितु देश के आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास में भी बाधक है। यहाँ पर मुख्य रूप से ध्यान देने वाली बात यह है कि निर्धनता और बेरोजगारी के बढ़ने का एक मात्र मुख्य कारण केवल हमारी बढ़ती जनसंख्या ही नहीं है बल्कि हमारी शिक्षा व्यवस्था भी काफी हद तक इसके लिये जिम्मेदार है।

कौशल विकास के द्वारा न केवल हम बेरोजगारी का हल प्राप्त कर सकते हैं बल्कि अपनी संस्कृति को भी सुरक्षित रख सकते हैं। या यूं कहें कि बेरोजगारी और संस्कृति के बचाव के लिये आज कौशल विकास करना अत्यंत जरूरी हो गया है। यदि हम अपने इतिहास का अध्ययन करें तो पाते हैं कि भारत के कारीगर इतने निपुण थे कि उनकी करीगरी का लोहा विदेशी भी मानते थे। भारत की चित्रकला, नक्काशी, मूर्तिकला, रेशम और बनारस की साड़ियाँ आज भी विश्व प्रसिद्ध है। परंतु आज हम पाते है कि हमारी संस्कृतिक हस्तकला कहीं लुप्त होते जा रही है। आज हमारा कारीगर भूख मर रहा है। उसके प्रयासों को आज न तो उचित प्रोत्साहन मिल रहा है और ना ही उचित पारितोषिक व पारिश्रमिक। यही कारण है कि ये कारीगर अपने पारंपरिक व्यवसायों से परहेज करने लगे। इसलिये यह आवश्यक है कि अब हमें न केवल विभिन्न लुप्त होते हुए कौशलों को पुनः जीवित करना है बल्कि इन कौशलों को भावी पीढ़ी को भी हस्तांतरित करना है और इसके लिए जरूरी है कि कौशल विकास को शिक्षा के साथ जोड़ा जाए तथा सरकार द्वारा ऐसे व्यावसायिक प्रोजेक्ट तैयार किये जाएँ जहाँ विभिन्न प्रकार के कौशलों का प्रयोग करना संभव हो

व्यावसायिक कौशल विकास के महत्व को देखते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि सभी विद्यार्थियों को कौशल एवं व्यावसायिक कौशल शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। शिक्षा क्षेत्र से जुड़े जानकारों का मानना है कि यदि प्रारंभ में ही बच्चों में इस तरह के कौशल विकसित किए जाएँ जो भविष्य में उनके लिये रोजगार के अवसर मुहैया कराएँ, तो निश्चित ही भारत की अर्थव्यवस्था में अमूल परिवर्तन किया जा सकता है। स्किल ट्रेनिंग के माध्यम से बच्चों में वह लौ जगा सकता है, जहाँ के सायबर युग के साथ कदम मिलाकर मल्टीडायमेंशनल पर्सनालिटी डेवलप कर सके

भारतीय परिपेक्ष्य में युवाओं में स्किल विकास के लिए अनेक भारतीय स्किल एजेंसियाँ जैसे–नेशलन स्किल डेवलपमेंट एजेंसी, नेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन, मिनिस्ट्री ऑफस्किल डेवलमेंट एंड एंटरप्रिन्योरशिप आदि ऐजेंसियाँ कार्यरत है।

रोजगार के लिये देश में बढ़ते कदम के साथ स्किल इंडिया का आगाज़

वर्तमान समय में देश के करोड़ों लोगों को हुनरमंद बनाने के लिए भारत सरकार ने अपने महत्वाकांक्षी मिशन में स्किल इंडिया, मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया को लॉच किया है। मौजूदा वित्तवर्ष में स्किल इंडिया मिशन के लिए सरकार ने 5042 करोड़ राशि का आबंटन किया है। वर्तमान समय में देश में केवल 3.5 फिसदी लोग हुनरमंद है। देश को विकासशील बनाने के लिए बड़े पैमाने पर हुनरमंद लोगों की जरूरत के साथ–साथ देश के युवाओं के हुनर को पहचाने की आवश्यकता है। नेशनल स्किल डेवलपमेंट योजना के तहत् 2022 तक करीब 50 करोड़ लोगों को हुनरमंद बनाने का लक्ष्य रखा गया है। देश के जानकारों का मानना है कि मैन्यूफैक्चरिंग सेगमेंट में स्किल डेवलपमेंट की जरूरत है। जिसके तहत

अगले कुछ साल में बड़े पैमाने पर रोजगार अवसर युवाओं को मिलेंगे

वर्तमान स्कूली शिक्षा व्यवस्था में सुधार के बिना निरर्थक स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम

देश में शिक्षा की बदतर हालत के बारे में सभी जानते है। स्कूली शिक्षा की सर्वे रिपोर्ट में ... बताया गया है कि पाँचवीं कक्षा के अधिकांश छात्र दूसरी कक्षा का पाठ भी नहीं पढ़ सकते। यह सहज ही कल्पना की जा सकती है कि हाईस्कूल की बोर्ड परीक्षाओं के लिये वे कितने तैयार होंगे। शिक्षकों की कमी के कारण छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों ... भाषा व गणित का स्तर खराब होात है जिससे ... बड़ी कक्षा में आने पर समझ नहीं पाते परिणामस्वरूप वह स्कूल आना छोड़ देते है नतीजा स्कू... ... डॉपआउट रेट काफी ज्यादा है। स्कूली शिक्षा व्यवस्था में सैकड़ों कमियाँ है लेकिन इस ओर कोई ध्या... नहीं दे रहा। जिम्मेदार लोग समस्या को पहचाने से ही इंकार करते है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी डिजिटल इंडिया एवं स्किल इंडिया पर जोर देक बिलकुल सही किया है। सूचना प्रौद्योगिकी ... फायदा उठाने के लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्य अनिवार्य है। पूरा विश्व यहाँ तक की ... अविकसित राष्ट्र भी, बेहतर शिक्षा और साक्षरता दर की दिशा में आगे बढ़ रहें है

देश को एजुकेशन सुपर पावर बनाने के लिए स्किल डेवलपमेंट एजुकेशन

वर्ष 1991 में देश की केवल 16 फी... आबादी शिक्षित थी। वर्ष 2011 तक यह आँकड़ा 74 फीसदी से ज्यादा हो चुका था, आजादी के बाद आधारभूत संरचनाओं के विस्तार और क... प्रावधानों के जरिए सबको आसानी से शिक्षा उपलब्ध कराने का अीियान शुरू हुआ था। 1950 में देश का नया संविधान लागू होने के बाद भारत एजुकेशन सुपर पावर बनने की राह पर अग्रसर है। यदि देश के अभिभावक अपने बच्चों को किसी कौशल व सीखने के लिए प्रेरित करें तो हम भविष्य के भारत को स्किल सुपर पावर बना सकते है

देश की 54 फीसदी से ज्यादा आबादी केवल 25 वर्ष से कम उम्र की है और नेशनल स्कि... डेवलपमेंट कार्पोरेशन के अनुसार वर्ष 2022 तक हर साल करीब 1 करोड़ 28 लाख लोग वर्कफोर्स में शामिल होगें। चीन के बाद भारत दुनिया सबसे ज्यादा वर्कफोर्स वाला दूसरा बड़ा देश लेकिन10 फीसदी लोगों के पास ही वोकेशन... ट्रेनिंग है, जबकि करीब 90 फीसदी नौकरियों के लिए यह जरूरी हैं

रोजगार के लिए परफेक्ट बनाने होगें मौजूद ग्रेजुएट्स

वर्तमान स्थिती को मद्देनजर रखकर कहा जा सकता है कि भारत कि अर्थव्यवस्था में काफी हद तक सुधार हुआ है जिससे देश में रोजगा... ... अवसर दिनों दिन बढ़ रहे है। सरकार की पहल से देश में वोकेशनल युनिवर्सिटीज की संख्या भी बढ़ेगी। लेकिन इन सब के बीच आज युनिवर्सिटीज अभ... महज ग्रेजुएट ही तैयार कर रही है। उन विद्यार्थियों स्किल्ड वर्कफोर्स नही है। वर्तमान के छात्र... क्रिएटिविटी, टीमवर्क, कम्युनिकेशन लीडर्श... इत्यादि स्किल्स की कमी देखी जा रही है। तथ्यों से जुड़े विशेषज्ञों का मानना है कि युनिवर्सिटीज 6१ प्रतिशत छात्रों को प्रेक्टिकल के बजाए थ्योरी प... जोर दे रही है। 57 प्रतिशत युनिवर्सिटीज छात्रों की टेक्निकल और साफ्ट स्किल्स पर ध्यान नहीं दे रही है, और 47 प्रतिशत छात्र बदलती तकनीकी साथ अपडेट नहीं है

वोकेशनल प्रशिक्षण के क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता

वोकेशनल ट्रेनिंग के क्षेत्र में सरक... ... महत्वपूर्ण संसोधन और सुधार की आवश्यकता है। वोकेशनल प्रशिक्षण के क्षेत्र में हम कितने पिछड़े है, इस बात का अंदाजा इन आंकड़ों के आधार लगाया जा सकता है। जो निम्न प्रकार है-

कोरिया	जापान	जर्मनी	यूके	भारत
96%	80%	75%	68%	10%

स्रोत – नेशलन काउँसिल ऑफ वोकेशनल ट्रेनिंग (NCVT)

इन आँकड़ों के आधार पर हम कह सकते ह कि वोकेशनल प्रशिक्षण के क्षेत्र में हम कितने पिछड़े हुए है। इसीलिए डिग्री होने के बावजूद हमें नौकरी नहीं मिलती है

शिक्षा के हर सेक्टर में हुनरमंद लोगो की जरूरत है स्किल इंडिया से अगले कुछ साल में बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। सरकार की पहल से देश में वोकेशनल युनिवर्सिटीज संख्या भी बढ़ेगी। फिलहाल देश में ट्रेनिंग की जरूरत का केवल 30 फिसदी ही मौजूद है, ऐसे में स्किल इंडिया में काफी निवेश ओर वृद्धि के मौक नजर आ रहें है। देश का करीब 65 फीसदी वर्कफोर्स फिलहाल कम स्किल वाले रोजगार में है, लेकि अर्थव्यवस्था के विकास के साथ वर्ष 2022 तक भारत के करीब 34 करोड़ 70 लाख स्किल्ड लोगों की जरूरत होगी। सरकार ने स्किल डेवलपमेंट मिशन को मेक इन इंडिया अभियान के साथ जोड़ने की घोषणा की है। इसके अलावा स्किल डेवलपमेंट के लिए अलग से मंत्रालय बनाया है, लेकिन स्किल ट्रेनिंग का लक्ष्य हासिल करने के लिए सबसे जरूरी क्षमता का विस्तार और प्राइवेट सेक्टर की भागीदारी को बढ़ाना आवश्यक है

निष्कर्ष

शिक्षा के स्तर को सुधारने हेतु शिक्षाविदों एव सरकार को शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन की एक पहल करनी होगी। जब तक शिक्षा के स्त गुणात्मक सुधार नहीं होगा, तब तक रोजगार की संभावनाओं में भी बदलाव नहीं आएगा। शिक्षा मे माध्यम से छात्रों की मानसिक और बुनि क्षमताओं में परिवर्तन लाकर उन्हें कौशल यु शिक्षा देनी होगी, इसके लिए शिक्षक ज्ञान के स्त्रोत की तरह नहीं, बल्कि फैसिलिटेटर यादी मदद करने और सुगम बनाने वाले की तरह पेश आएँ। आ क्रिकेट के महानायक सचिन तेंदुलकर, कला जगत के महानायक अमिताभ बच्चन एवं स्वर कोकिल लता मंगेश्कर जी पहचान उनकी कौशल या योग्यता से है, न की उनकी डिग्री से। फिर बच्चों को उनके प्राप्तांकों के आधार पर क्यों आँकते है? प्रत्ये बच्चे में एक निवेश प्रतिभा होती है। हर बच्चे क उसके कौशल के आधार गतिविधियों में भाग लेने के मौके दें। ताकि उनके अंदर छिपी कौशल प्रतिभा को ज्यादा से ज्यादा निखारा जा सके। शिक्षा क स्कूल के बाहरी जीवन या आस-पास की चीजों से जोड़े और बच्चों की सहभागिता से उनके अनुभव का दायरा बढ़ाएँ। बच्चों की गलतियों पर गा लगाने या सजा देने के बजाए उनमें अपनी गलतियाँ स्वयं ढूँढ़ने और सुधारने का नजरिया विक करें। जो उनके जीवन भर काम आने वाला ह भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम देश में शिक्षा के पूरे ढाँचे "सम्पूर्ण" बदलाव लाने की वकालत करते थे। उनका मानना था कि युवाओं में ऐसे कौशल विकसित किए जाएँ जो भविष्य चुनौतियों से निपटने में मदद्गार हो। इसमें ए और पहलू इसे सस्ता बनाना और देश की गर आबादी की पहँच में लाना भी ह गा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

पाण्डे, रामेश्वरी, (2011). एजुकेशन, ट्रेनिंग एंड स्किल डेवलपमेंट इन इंडिया, न्यू पब्लिकेशन, नई दिल्ली

मेहरोत्रा, संतोष, (2014). इंडिया चैलेंज-रिफोर्मिंग वोकेशनल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग दू हारनेस द डेमोग्राफिक डिवाइडेड, औक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, यू.एस.ए.

सत्यमूर्ति – शिक्षा के विविध आयाम, महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन, अरुण प्रकाशन दिल्ली

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2018, Vol. (2) No. 1 & 2 : 58-61
©Apollo Journal of Educational Research

सचना तकनीक के सहारे फैलता आतंकवाद

श्री मनोज विश्वकर्मा एवं डॉ संतोष कुमार वर्मा

सारांश

आतंकवाद आज जो रूप धारण कर रहा है इससे भारत की नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए एक ज्वलंत समस्या बन गया है। सूचना तकनीक के नित, नवीन रूपों से जितनी सुविधाएँ मानव जीवन को आसान बनाया है उतना ही आतंक फैलाना भी सरल हो गया है। भारत को स्वतंत्र हुए करीब सात दशक बीत चुके है किन्तु आज भी कुछ समस्याएँ जैसी की तैसी ही है उनमें सबसे बड़ी समस्या, आतंकवाद है। आतंकवाद एक तरह का हिंसात्मक गतिविधि के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो कि अपने आर्थिक, राजनीतिक एवं विचारात्मक लक्ष्यों की प्रतिपूर्ति के लिए गैर–सैनिक अर्थात् नागरिकों की सुरक्षा को भी निशाना बनाते हैं। सूचना तकनीक और आतंकवाद आज एक–दूसरे के पक्के साथी बन गए है। जैसे–जैसे मुम्बई बम हमलों के षड्यंत्र की परतें खुल रही है यह बा.. खुलकर सामनेआ रही है कि मोबाइल और इन्टरनेंट तकनीक ने आतंकवादियों का किस तरह से सहयोग किया। मुम्बई हमलों की जाँच के दौरान पता चला है कि बंग्लादेश के एक व्यक्ति . आतंकवादियों को सिमकार्ड और जाली आईडी कार्ड पश्चिमी देशों जैसे–मॉरिशस, यूके, युएस, आस्ट्रेलिया के जरिए मुहैया कराए। हमले में मारे गए एक आतंकी के पास मॉरिशस का आइडेंटिटी कार्ड बरामद हुआ।

प्रस्तावना :

आतंकवादी जिस बोट से मुम्बई में धुस उनमें एक सैटेलाइट फोन पाया गया जह.. .. जलालाबाद में किए गए कॉल्स का विस्तृत विवरण डिटेल था। ये कॉल्स आतंकवादी .. .. लश्कर–ए–तैयबा के प्रमुख जाकिर उर्रहमान व किए गए थे।

आतंकियों की सुरक्षित वापसी के रास्ते .. उनके साथियों ने जीपी एस डिवाइस में स्टोर करके रखा था। बोट में ग्लोबल पॉजिशनिंग सिस्टम मैप भी पाया गया जिसके जरिए कॉल्स और बोट द्वारा कराची से कोलाबा (मुम्बई) तक यात्रा की जानकारी मिली है। इतना ही नहीं आतंकियों ने फर्जी आ एम ई आई नम्बर वाले मोबाइल फोन्स का उपयोग किया था।

आतंकियों ने इस घटना को अंजाम देने के लिए 3 सिम कार्ड बांग्लादेश की सीमा से खरीदे थे और एक सिम अमेरिका के न्यूजर्सी से भी खरीदी गई। इन्टरनेट फोन सक्रिया करने के लिए इटली से पैसा आता था। इटली के ब्रेशिया शहर से पकड़े गए दो लोग इस काम के लिए आतंकियों को इन्टरनेट के जरिए फंड भेजते थे।

सोचने की गति से बाहर आती खबरे

26 नवम्बर 2008 को मुम्बई होटल ताज पर आतंकी हमला शुरू होने के बाद उसे ट्विटर पर हर 5 सेंकण्ड में 70 टवीटर भेजे जा रहे थे। इसव

1. शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, विभावि हजारीबाग (झारखण्ड)
2. सहायक प्राध्यापिका, राजनीति विज्ञान विभाग, सरिया कॉलेज, सरिया, गिरिडीह (झारखण्ड)

उजागर मुम्बई हमलों की ब्रेकिंग न्यूज, एसएमएस और फिलकर के जरिए बाहर आइ। मुम्बई के एक ब्याँगर ग्रुप ने अपने मेट्रो ब्लॉग का उपयोग हमलों के सन्देश को आदान–प्रदान के लिए किया गया इसी तरह हमलें में फँसे होटल ताज के लोगों व. भी स्टाफ एसएमएस और मोबाइल सतर्क कर रहा था। आतंकी हमलो की खबर की पुष्टि होने के 1 मिनट के बाद ही मुम्बई हमलों के ... विकीपीडिया परएक विशेष सेट तैयार कर दि .. गया था। जिस जगहों पर हमले हुए थे उनके बारे में ताजा जानकारी इन्टरनेट पर लगातार उपलब्ध हो रही थी इसे गुगल मैप पर भी हमलें ..... इमारतों की लोकेशंस दिखाया जा रहा था। आतंकियों ने हमलों की साजिश में ब्लैक बेरी जैसे ... तकनीक वाले फोन का इस्तेमाल किया था। जिसके जरिए वो सामाचारों के लिए ब्रिटेन की एक बेवसाइड से जुड़े रहते थे। ताज होटल में टीबी केबल. सम्पर्क टूटने के बाद आतंकियों ने इन्टरनेट . इस्तेमाल बाहर की जानकारी प्राप्त करने के लिए किया था। आतंकियों से 5 ब्लैक बेरी फोन बरामद हुए जिससे पता चलता है कि आतंकी इंग्लैण्ड व भी सम्पर्क में थें। उन्होंने न सिर्फ अंग्रेजी बलि उत्तरी इंग्लैण्ड के ज्यादा पहचानी जाने वाली ... और अरबी बेवसाइटों के जरिए भी जानकारी एकत्र की थी। उनके पास मेगाफोन्स भी थे जिससे एक–दूसरे को चेतावनी देते रहते थे

आतंकवाद से निपटने पर जोर—भारत बहुत ही अत्याधिक समय से आतंकवाद का शिकार हो रहा है। भारत के कश्मीर, नागालैंड, पंजाब, अर. आदि विशेष रूप से आतंक प्रभावित क्षेत्र रहे हैं. यहाँ कई प्रकारके आतंकवादी है जैसे पाकिस्तानी, माओवादी, इस्लामी, सिक्ख, ईसाई, नक्सली आदि। जो क्षेत्र आज तक आतंकवादी गतिविधियों से लम्बे समय से जुड़े हुए है उनमें जम्मू कश्मीर, मुम्बई, मध्य भारत (नक्सलवाद) सात बहन राज्य (उत्त.- पूर्व सात राज्य) आदि शामिल है। अतीत में पंजाब पनपते उग्रवाद में आतंकवादी गतिविधयाँ शामिल. हो गयी जो भारत देश के पंजाब राज्य और देश की राजधानी दिल्ली तक फैली हुई थी। 2006 में देश के 608 जिलों में कम से कम 232 जिलों विभिन्न तीब्रता स्तर के विभिन्न विद्रोही ... आतंकवादी सलाहकार एम. के नारायणन का कहना था कि देश में 800 से अधिक आतंकवादी ... सक्रिय हैं। 1987 के एक विवादित चुनाव के साथ कश्मीर में बड़े पैमाने पर सशस्त्र उग्रवाद की शुरूआत हुई जिसमें राज्य विधान सभा के कुछ तत्वों ने एक आतंकवादी खेमे का गठन किया।

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत. . अभियान को एक बड़ी जीत मिली, जब ब्रिक्स देशों ने लश्कर–ए–तैयबा (एलईटी) और जैश–ए–मोहम्मद (जेईएम) जैसे पाक स्थित आतंकवादी संगठनों का नाम अपने घोषणापत्र में शामिल किया तथा इनके जैसे तमाम आतंकवादी संगठनों से निपटने . व्यापक दृष्टिकोण अपनाने का आहान किया। ब्रिक्स में ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका देश शामिल है। ब्रिक्स देशों का कहना ... आतंकवाद करने और इसमें सहयोग देने वालों को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। घोष .. .. आतंकवाद को रोकने और निपटने के लिए देशों की प्राथमिक भूमिका और जिम्मेदारी को रेखांकित करते हुए जोर दिया गया कि देशों की सम्प्रभुता अ... आन्तिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करते हुए आतंक के खिलाफ अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने की जरूरत है। ब्रिक्स के देशों ने एक सुर में कहा है कि ह

सभी देशों से आतंकवाद से निपटने कट्टरपंथ ह.. खात्मा करने, आतंकवादी संगठनों में भर्तियों (विदेशी लड़ाको सहित) को रोकने, आतंकवाद का वित्तपोषण बंद करने के लिए व्यापक दृष्टिकोण अपनाने व आह्वान करते है। इनमें धनशोधन, हथियारों ‹.. आपूर्ति, आतंकवादी अड्डो को ध्वस्त करना, नशीले पदार्थों की तस्करी और अन्य आपराधिक गतिविधियों द्वारा नवीनतम सूचना एवं संचार प्रौद्योगिवि.. (आईसीटी) के जरिए सोशल मीडिया सहित इन्टरनेट का दुरूपयोग रोकना शामिल हैं

ब्रिक्स नेताओं के द्वारा कहा गया कि सूच.. और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के जरिए सतत् आर्थिक विकास एवं सामाजिक समावेश को बढ़ावा देने के लिए मदद मुहैया करायी जानी चाहि.. इसके तहत पूरी दुनिया में लोगों की बड़े पैमाने पर इलैक्ट्रॉनिक निगरानी और डाटा एकत्र करने ‹.. गतिविधियों तथा राष्ट्र की सम्प्रभुता एवं मानवाधिकारों के हनन की निन्दा की गई

इसमें कहा गया है कि हम साइबर अपरा.. का मुकाबला करने को लेकर सहयोग की संभावना तलाशेंगे और हम इस क्षेत्र में कानूनी रूप से बाध्य माध्यम के लिए बातचीत को लेकर फिर से अपनी प्रतिबद्धता जताते है। ब्रिक्स नेताओं ने कहा इसमें आगे हम आईसीटी के इस्तेमाल से साक्षा सुरक्षा चिंताओं का निवारण करने के लि साझा गतिविधियों को विकसित व संभावनाओं को जताते है

मुसीबत बनते इंटरनेट कॉल्स—मुम्बई हमले के दौरान जबरदस्त चर्चा में आई सोशल नेटवर्किंग साइट ट्विटर भले ही आज सबसे लोकप्रिय औ शक्तिशाली सामाजिक माध्यम हो लेकिन सरकारी एजेंसियों को आज भी इनके .... इस्तेमाल होने का डर है। खासतौर से आतंकवादं. इन साइट्स को आपस में सम्प्रेषण और सूचना का माध्यम बनाते है। हाल ही में अमेरिकी रक्षा विभाग ने चेतावनी दी थी कि आतंकवादी संगठन निःशुल्क सेवाओं जैसे ट्विटर को बातचीत का जरिया बन सकते है जिसे ट्रैक करना मुश्किल होता है

मुम्बई आतंकी हमला (26 नवम्बर 2008, के बाद इंटेलीजेंस ब्यूरो (आई बी) ने संचार मंत्रालय से सभी इन्टरनेट टेलीफोन सेवाएँ (वीओ आई पी, तब तक बंद करने को कहा है, जब तक कि संदिग्ध कॉलो को ट्रेस (स्रोत की पहचान) व ट्रेक (सटीक स्थिति) पता करने की व्यवस्था मुकम्मल न जाए।

सूचना प्रौद्योगिकी के संदर्भ में जब हम सूचना शब्द का प्रयोग करते है, तब यह एक तकनीक परिभाषिक शब्द होता है। वहाँ सूचना के संदर्भ ‘आकड़ा’ (data) और प्रज्ञा, विवेक, बुद्धि.... (Intelligence) आदि शब्दों का भी प्रयोग मिलता है। प्रौद्योगिकी ज्ञान की एक ऐसी शखा है जिस सरोकार यांत्रिकीय कला अथवा प्रयोजन प विज्ञान अथवा दोनों की समन्वित रूप से म जाता हैं।

हालाँकि यह बात भी पूर्णतः सही है कि सूचना तकनीक के कारण ही आतंकवादियों के नेटवर्क का पता लगाने में मदद मिली लेकिन इस तकनीक का ज्यादा से ज्यादा लाभ आतंकवादियों ने उठाया हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

इण्डिया एस्सेस्मेंट – 2007।

Hoffman, ब्रुस (1998). “अंदर आतंकव.. कोलम्बिया विश्वविद्यालय प्रेस, पृष्ठ सं.–32।

द इंडीपेंडेंट आईसीटी (ICT) (1997). इन स्कूल्स कमीशन।

Indian Police Arrest (2006). Islamic cleric for Blasts.

Terrorism (2006). Encyclopaedia Britannica P. P - 3.

रीनाल्ड रीगन, (1985). राष्ट्रीय रूढ़िवादी पर भाषण सम्मेलन, मार्च 8

विश्वविद्यालय पार्क : (1995). पेन्सिलवेनिया राज्य विश्व-विद्यालय, पृ. सं. 467।

मीडिया और आतंकवाद (1997). पॉल विलकिंसन।

राष्ट्रीय सलाहकार समिति (1976). वाशिंगट डीसी।

फेडरल अनुसंधान प्रभाग, (2002). ल्योंस प्रेस

जार्ज मेसन विश्वविद्यालय संघर्ष, (20.. विश्लेषण संकल्प कटौती एजेन्सी, जनवरी

यहोवा देसाई हंसर्द, (1998). सभा यहोवा, सं. 72, 3 Sep.।

मासिक समीक्षा (2002). (Monthly Review), JAN.

कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी (1997). इन प फौर्मेशन यूके।

एफ. एम. 100-20, (1990). सैन्य संचाल कम तीव्रता संघर्ष, Dec 05.

एलेक्स (2005). पेटी टाइम पत्रि (Time Magazine) Sep 26.

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2018, Vol. (2) No. 1 & 2 : 62-64
© Apollo Journal of Educational Research

विभिन्न विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक अभिवृत्ति पर अध्ययन

श्रीमती शालिनी वर्मा

सारांश

वर्तमान परिदृश्य के अन्तर्गत वैश्वीकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण का प्रभाव न केवल सामाजिक परिदृश्य पर पड़ा है बल्कि इसके प्रभाव के कारण सम्पूर्ण शिक्षा जगत भी प्रभावित हुआ है। अध्यापकों के व्यावसायिक अभिवृत्ति के अध्ययन हेतु शासकीय व निजी विद्यालयों के (120) अध्यापकों का चयन कर यादृच्छिक विधि द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया और निष्कर्ष में पाया कि शासकीय व निजी विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक अभिवृत्ति में अंतर पाया गया। व्यावसायिक अभिवृत्ति के मापन हेतु डॉ. ए.के. तिवारी द्वारा निर्मित अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया।

प्रस्तावना :

शैक्षिक परिदृश्य जहाँ शिक्षकों की योग्यत अभिक्षमता, ज्ञान, कौशल और जीवन–मूल्यों शैक्षणिक संस्थाएँ विद्यार्थियों के लिएकिस रूप में लाभान्वित हो सकती है इस दिशा में शैक्षिक प्रबंधकों और प्रशासकों का चिंतन नहीं रहता है शैक्षणि संस्था के विकास में उनकी व्यावसायिक प्राथमिक बन गई है जिसका प्रभाव शिक्षकों मनः स्थिति और उनकी सोच पर भी पड़ भौतिक समृद्धि एवं संसाधनों के अर्जन द्वारा समाज में प्रतिष्ठापूर्ण पद पाने की लालसा ने शिक्षकों को भी इस तरह भ्रमित किया है कि वे अपने कर्त्तव्य से विमुख ही गए है। जिसके कारण शिक्षक एवं विद्यार्थियों के संबंधी की गरिमा भी प्रभावि हुई है। एक ओर जहाँ शिक्षण व्यवसाय का धारण कर चुका है, वही दूसरी ओर विद्यार्थियों क मनोवृत्तियाँ भी तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। आज शिक्षक से प्राप्त ज्ञान को विद्यार्थी ऋण के रूप में स्वीकार नहीं करते वरन् वे समझे है स्वयं शिक्षक का जीवन निर्वहन उनके द्वारा शुल्क के अधीन है। इस प्रकार संबंधों में त्याग और विश्वास जैसे मूल्यों के स्था व्यावसायिकता परिलक्षित होने लगी है

शिक्षकों ने व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन आशा हेंगर, ममता परमार व प्रेरणा कुमा (2001) किया और पाया कि शिक्षक व्यावसायिक अभिवृत्ति पर तनाव का प्रभाव पड़ता है। पार्वती, एस. गण्टी, जगदीश (2009) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में शैक्षिक व्यवसाय की अभिवृत्ति का अध्ययन किया और पाया कि शैक्षिक व्यवसाय के प्रति उनकी अभिवृत्ति सार्थक नहीं थी।

उददेश्य

(1) विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक व्यावसायिक अभिवृत्ति के मध्य अंतर का अध्ययन करना।

1. शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, विभावि हजारीबाग (झारखण्ड)
2. सहायक प्राध्यापिका, राजनीति विज्ञान विभाग, सरिया कॉलेज, सरिया, गिरिडीह (झारखण्ड)

(2) शासकीय विद्यालयों के शिक्षकं. ... व्यावसायिक अभिवृत्ति के मध्य अंतर का अध्ययन करना।

(3) निजी विद्यालयों के शिक्ष. ... व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना

परिकल्पना

(1) विभिन्न विद्यालयों के शिक्ष... ... व्यावसायिक अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

(2) शासकीय विद्यालयों के शिक्षकं. ... व्यावसायिक अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

(3) निजी विद्यालयों के शिक्ष. ... ... व्यावसायिक अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

न्यादर्श व विधि

शोध अध्ययन हेतु भिलाई के (120) शिक्षकों जिसमें 60 शिक्षक व 60 शिक्षिकाएँ थे . व्यावसायिक अभिवृत्ति के मापन हेतु डॉ. ए. .. तिवारी द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है। शिक्षकों का चयन उददेश्य यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

विश्लेषण

विभिन्न विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक अभिवृत्ति को निम्न सारणी से दर्शाया गया है

सारणी क्रमांक 1

स्कूल	क	ख	ग	अभिवृत्ति
शासकीय	60	101.06	6.69	4.02
निजी	60	112.7	8.60	

सार्थक

इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षक व शिक्षिकाओं के मध्य अभिवृत्ति में अंतर पाया गया। क्यों‍ शिक्षक की व्यावसायिक अभिवृत्ति अर्थात् उस... ऊपर पारिवारिक दायित्व होता है परन्तु शिक्षिकाओं पर इस तरह की जिम्मेदारी नहीं होती है

शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक अभिवृत्ति को निम्न सारणी से दर्शाया गया है

सारणी क्रमांक 2

लिंग	क	ख	ग	अभिवृत्ति
शिक्षक	30	110.70	6.23	0.86
शिक्षिकाएँ	30	106.10	6.06	

सार्थक नहीं

शासकीय विद्यालयों के शिक्षक व शिक्षिकाअ‍ के मध्य 58 स्वतंत्रता की कोटि ... ... विश्वसनीयता स्तर पर ज का मान 0.86 है। अतः दोनों के मध्य व्यावसायिक अभिवृत्ति में सार्थ अंतर नहीं है

निजी विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायि‍ अभिवृत्ति को निम्न सारणी से दर्शाया गया है

सारणी क्रमांक 3

लिंग	क	ख	ग	अभिवृत्ति
शिक्षक	30	105.40	8.40	.33
शिक्षिकाएँ	30	107.20	8.51	

सार्थक नहीं

निजी विद्यालयों के शिक्षक व शिक्षिकाओं ‍ मध्य अंतर सार्थक नहीं पाया गया

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के आँकड़ों से स्पष्ट है कि शिक्षक व शिक्षिकाओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति में अंतर नहीं पाया गया परंतु शासकीय व निजी शिक्षकों के मध्य व्यावसायिक अभिवृत्ति में अंतर पाया गए

शासकीय व निजी शिक्षकों के मध्यमान की तुलना करने पर निजी शिक्षकों का मध्यमान अधिक पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि निजी विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति अधिक होती है। और वे अपनी संस्था के प्रति पूरी ईमानदारी के साथ कार्य कर उसे निरंतर आगे बढ़ाने प्रयासरत रहते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

गिल टी.के. एवं सैनी एस.के. (2005). इफे ऑफ टीचर एजुकेशन ऑन एटीट्यूड अं स्टूडेन्ट्स टीचर्स टुवर्डस व टीचिंग प्रोफे अन्वेशिका इंडियन जनरल ऑफ .. एजुकेशन वाल्यूम-2, नं.-2, प्रष्ठ 8-14।

हेंगर, आशा, परमार, ममता व कुमार .. (2001). स्टडी ऑफ फीमेल प्रोफेसनल इंडियन जरनल ऑफ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन वाल्यूम 32(1), 49-54।

पार्वती, एस. गण्टी, जगदीश (2009). एटीट्यूड ऑफ सेकेड्री टुवर्डस ठीचिंग प्रोफेशन एडुटे वाल्यूम 9(3), 30-32।

रेडडी, एल.के व सिद्धार्थ बी (2012). आक्यूपेशनल स्ट्रेसर इन द सेकेड्री हेंड मास्टर्स इन ए. जरनल ऑफ कम्यूनिटी गाईडेंस एंड रि वाल्यूम 29(1), 57-66।